

भारत — एक सार्यक दृष्टि — कुशवन्त सिंह
सम्पादक — राहुल सिंह

[Kushwant Singh's
India Without Humberg—Editor Rahul Singh]
का हिन्दी अनुवाद

1985

कश्मीर विश्वविद्यालय की सम० ए० हिन्दी उपाधि हेतु,
चतुर्थ वर्षार्ध—कोर्स संख्या एन आई ०३२ टी,
की परीक्षा के लिए प्रस्तुत अनुवाद ।



वितरक :-

श्री० रोहितपाल गुप्ता
वीरपुर, दिल्ली विभाग,
कश्मीर विश्वविद्यालय,
वीरपुर — उत्तरांचल २

अनुवादक :-

अनुवादक इन्द्र कुमार
अनुवादक :- २१.११/८३
एन० ए० हिन्दी कार्यलय—४३





भारत — एक सार्थक दृष्टि — खुशवन्त सिंह
सम्पादक — राहुल सिंह

[Khushwant Singh's
India Without Humbug—Editor Rahul Singh]
का हिन्दी अनुवाद

1985

कश्मीर विश्वविद्यालय की एम० ए० हिन्दी उपाधि हेतु,
चतुर्थ वर्षाद्ध—कोर्स संख्या एच आई ०३२ टी,
की परीक्षा के लिए प्रस्तुत अनुवाद ।

निर्देशक :-

डॉ० रोशनलाल ऐमा
रीडर, हिन्दी विभाग,
कश्मीर विश्वविद्यालय,
श्रीनगर — कश्मीर ।

25/6
Professor and Head
Post Graduate Hindi Dept
Kashmir University Srinagar Kashmir

अनुवादक :-

महाराज कृष्ण मुसा
अनुक्रमांक :- २११५/८४
एम० ए० हिन्दी कार्यक्रम—८४

मान — एक सौ कड़ों — लम्बाई
 सपाक — लम्बाई

[Kishwant Singh's
 India Without Hindustan—Editor: Kishwant Singh]
 का हिन्दी अनुवाद

1982

कर्मचारी विप्लववादी की प्रमाण-पत्र
 यह प्रमाण-पत्र कि प्रमाण-पत्र
 की प्रमाण-पत्र कि प्रमाण-पत्र

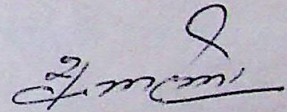


प्रमाण-पत्र
 प्रमाण-पत्र
 प्रमाण-पत्र

प्रमाण-पत्र
 प्रमाण-पत्र
 प्रमाण-पत्र

- प्रमाण - पत्र -

प्रमाणित किया जाता है कि महाराज कृष्ण मुसा अनुक्रमांक 2115 /84 ने चतुर्थ वर्ष में कोर्स संख्या एच0आइ 032टी के लिए राहुल सिंह द्वारा सम्पादित पुस्तक "सुश्रवन्त सिंह - इण्डिया विद-आउट हमबाग" से पृष्ठ संख्या 49 से 98 तक का यह हिन्दी अनुवाद मेरे निर्देशन में स्वयं किया है।



डॉ० रोशन लाल पेमा,
रीडर, हिन्दी विभाग,
कश्मीर विश्वविद्यालय,
श्रीनगर।

Reader,
Hindi Deptt. Kashmir University
SRINAGAR - 190 005

- १४ - १९११ -

आज का दिन बहुत ही अच्छा था। मैं बहुत ही खुश हूँ।
मैंने बहुत ही अच्छा काम किया। मैंने बहुत ही अच्छा काम किया।
मैंने बहुत ही अच्छा काम किया। मैंने बहुत ही अच्छा काम किया।
मैंने बहुत ही अच्छा काम किया। मैंने बहुत ही अच्छा काम किया।

मैंने बहुत ही अच्छा काम किया। मैंने बहुत ही अच्छा काम किया।
मैंने बहुत ही अच्छा काम किया। मैंने बहुत ही अच्छा काम किया।
मैंने बहुत ही अच्छा काम किया। मैंने बहुत ही अच्छा काम किया।
मैंने बहुत ही अच्छा काम किया। मैंने बहुत ही अच्छा काम किया।

(९)

भारतीय वर्षा ऋतु— मानसून

जून १: यह वर्ष का सर्वाधिक गर्मी का दिन था—
साथे में 85° सी, और धूप भी नर्क की गहनतम गर्मी के
समान थी। मैं एक टीले पर खड़ा सामने के दृश्य को
देख रहा था। मेरे पीछे भूरी, बंजर, गोल पत्थरों से
बिखरे-छिंदे शिलारखण्डों की पहाड़ियाँ थीं। मेरे सामने
धूल से भरे उदास खेतों का विस्तार था जो केकटस
और जवाब के चौधों से बंटा था; जिसकी कलियों का
ज्वलनशील वसंती रंग आँखों को लगभग जला रहा
था। यहाँ-वहाँ अमलतास अपनी पीली पंखुड़ियों के
गुच्छों के भार से लटक रहा था। गर्म हवा का एक
भोँका, धूल को अपनी लपेट में लेकर, और एक चक्रवात
के रूप में ऊपर और ऊपर उठाते हुए बंजर जमीन के
पार जाकर चट्टानी पर्वत से टकराकर समाप्त होगया।

दूर से बिगुल की ध्वनि सुनाई दे रही थी।
नर और नारियाँ तपते हुए खेत की ओर दौड़े,
जमीन पर झुककर, उन्होंने अपने कागों को
अपने हाथों से दबाया। सन्नाटे भरी खामोशी के
कुछ क्षणों के बाद एक गहरी गर्जना हुई। पूछी
काँप गई, पत्थर हवा में उछल पड़े, और काले
धुँए का एक बादल सलेटी आकाश की ओर उठने
लगा। बिगुल एक बार फिर बजा। नर और नारियाँ पुनः

(2)

उस स्थान की ओर भागे, जहाँ से वह आये थे। उन्होंने टीन के डिब्बों को बजा-बजाकर और चीख-चीखकर एक भयंकर कोलाहल मचाया।

यह देखने के लिए कि क्या हो रहा है मैं नीचे उतरा। रेलों के बीच अवतल में एक ताज़ा कूआं खोद गया था, जो ऐसा लग रहा था मानों 30 फुट लम्बा एक सिलेंडर पृथ्वी के भीतर खोदा गया हो। पत्थरीली ज़मीन में बनाया गया छेद, पारे की तरह चमक रहा था। पानी गदला और सम्भवतः खारा भी था। जैसे चीनी के दानों के ऊपर बर उमड़ आती है। वैसे ही वे अपनी हथेलियों में लेकर, होंठों से श्रद्धापूर्वक ऐसे लगा रहे थे जैसे कि यह अमृत हो, और थोड़ा सा अपने चेहरों पर छिड़क रहे थे।

औरंगाबाद से चार मील दूर, एक छोटा सा गाँव है नक्षत्रवाड़ी, जहाँ मैंने इस विस्फोट को देखा। जिला औरंगाबाद सूखे से बहुत बुरी तरह प्रभावित हुआ है। १९७१ की शीतऋतु-फसल नष्ट हो गई थी। जैसे ही गमियाँ शुरू हो गई, कूँए सूखने लगे। अप्रैल तक स्थिति बहुत ही निराशजनक हो गई थी। अनेक गाँव को बहुत सारे टैंकरों द्वारा पानी पहुँचाया गया।

नक्षत्रवाड़ी अपने पड़ोसियों की तुलना में भाग्यशाली था; एक दर्जन कूओं में इतना पानी तो था कि इस गाँव के ६७५ निवासियों की प्यास बुझा सके। और अब उन्होंने एक ओर भूमिगत दरार खोज निकाला था। फिर भी सरपंच, विजयदत्त देवोदत्त त्रिवेदी, के परिवार के सिवा, जिन के पास ७५ एकड़ ज़मीन थी

और अपना एक कूआँ था, किसी ने भी अनेक सप्ताहों से नहाया नहीं था। अनेक कृषकों ने अपने पशुओं को कसाईयों के हाथों आधे से भी कम कीमत पर बेच दिया था। वह फर्चर तोड़कर सड़के और तालाब बनाने की सहायता परियोजनाओं में काम कर रहे थे।

हम सरपंच के घर की ओर चल रहे थे, गाँव वालों की एक भीड़ हमारे पीछे-पीछे चल रही थी, सरपंच ने पूछा, "एक आदमी बिना पानी के कितने दिन रह सकता है?" "दो दिन? तीन दिन?" और यहाँ औरंगाबाद जिले में हम इसके बिना तीन वर्ष रहे हैं। हमारी फसले तबाह हो गई, रूपए में ९० चैसेकी फसल धूप में झुलस गई।"

हमने विजयदत्त त्रिवेदी के घर में प्रवेश किया और किसानों की भीड़ पीछे धुसी। त्रिवेदी स्पष्टतया समृद्ध था। एक बहुत बड़ा कमरा था जिसमें बिजली का फंखा और निऑन ट्यूब लाइट भी थी। दीवारें हिन्दू देवी-देवताओं, तथा — गांधी, नेहरू, बोस जैसे राजनैतिक नेताओं के भड़कीले चित्रों से भरी हुई थीं। उनके पास एक ट्रेक्टर, दो मोटर-साइकिल और एक ट्रांजिस्टर रेडियो भी था। चाय और बिस्कुट मंगाये गए।

"यदि पुनः वर्षा नहीं हुई तो आप क्या करेंगे?" मैंने किसानों से पूछा जो ज़मीन पर पालती माकर बैठे थे। पल-भर के लिए किसी ने उत्तर न दिया। तब ईसाई तहसीलदार निलसन इंगलिज, जो मेरे साथ आये थे बोले, "ऐसी बात मत कीजिए," उन्होंने मुझसे अंग्रेज़ी में कहा ताकि ग्राभीष उसे न समझ सकें

और तब उन्होंने मराठी में जोर से कहा, "कुछ ही दिनों में वर्षा होगी और अवश्य होगी।"

"अरे हाँ, इस वर्ष बहुत अधिक वर्षा होगी," नाय का कप मुझे पकड़ाते हुए, त्रिवेदी ने मुझे आश्वासन दिया।

"ऐसे संकेत है कि वर्षा जल्दी ही होगी।"

"कैसे संकेत?"

खानाबदोश जिप्सियों की जाति से सम्बन्धित एक बूढ़े बंजारे सीताराम जो अब एक स्थान पर बस गया था, से स्पष्ट करने को कहा गया। वह खड़ा हुआ, बेलने से पूर्व डुड़ी पर बड़ी हुई दाढ़ी को सहलाने लगा। "जितनी गर्मी होगी आनेवाला मानसून उतना ही शक्तिशाली होगा," उसने एक मराठी कहावत को उद्धृत करते हुए कहा। "मैंने अपने ७० वर्ष के जीवन में इतनी गर्मी नहीं देखी। और मैं प्रातःकालीन समीर में वर्षा की गंध सूंघ सकता हूँ।"

गाँव के लोग उसकी बातों से इस तरह चिपके थे जैसे कि वह एक चैगम्बर हो। ग्राम पंचायत की महिला सदस्या, सारोबाई, उठी और कहने लगी, "उन्हें पत्तों के बारे में बताओं।"

"अरे हाँ।" सीताराम ने जोर से कहा। करवाद और हीवर (दो कांटेदार भाड़ियों की जाति) उन पर नये पत्ते निकल आये हैं।" उसने अपने प्रभाव को बनाये रखने के लिए एक ओर मराठी मुहावरे को उद्धृत किया कि यदि मई में इन भाड़ियों पर पत्ते आ गए तो जून के प्रारम्भ में पानी आवश्यक रहता है। त्रिवेदी ने उसे उकसाते हुए कहा, "और पक्षी!

और पक्षियों के बारे में उन्हें बताओ।" सीताराम ने अपने हाथ अपने चेहरे पर फेरे और, थोड़ी देर रुकने के बाद कहने लगा, "पपीहा (हाक कूम्कू) निरन्तर कह रहा है 'पावस एला, पावस एला'; जिसका अर्थ होता है कि वर्षा आ रही है।"

मैंने उसके कथन का संशोधन करते हुए कहा, "यह तो केवल मराठी में है। हिन्दी में तो लोग इससे पीकाहल — मेरा प्रेमी कहाँ है? कहते हैं।"

उसने उत्तर दिया, "उत्का अर्थ भी यही है। वर्षा का समय प्रेमियों का होता है।" पुरुष हंस पड़े तथा औरते अपने चेहरों को अपने हाथों में छुपाकर खिलखिला पड़ी। सीताराम स्वयं बहुत ही प्रसन्न दिखाई देने लगे।

"और अंग्रेज इस पक्षी की आवाज का अर्थ 'मस्तिष्क - ज्वर' निकालते हैं; और वे इसे मस्तिष्क-ज्वर का पक्षी मानते हैं।" मैंने उनसे कहा।

सीताराम ने तिरस्कारपूर्ण ढंग से उत्तर दिया, "अरे, अंग्रेज! वे इन सब विषयों के सम्बन्ध में क्या जानते हैं? यही कारण है कि वे अब भारत में नहीं हैं।" उसके श्रोतागण और अधिक प्रभावित हुए। उसने आगे कहा: "दो दिन पूर्व मैंने मानसून पक्षी (चितकबरे शिखाधारी कोयल) की आवाज भी सुनी। वह तो निश्चित संकेत है कि कुछ ही दिनों में वर्षा होगी।"

"मैंने भी पिछले वर्ष इस मानसून पक्षी की ध्वनिसुनी और बहुत कम वर्षा हुई थी," गाँव का एक निवासी बोला।

"यह सच है," बहुतों ने स्वीकार कर लिया।

सीताराम अप्रसन्न दिखाई देने लगे। त्रिवेदी ने उन्हें

करा लिया।

“यदि जावान है तो ऐसा सदैव नहीं होगा!” छत की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा। उसे यां तो हमें वर्षा भेजनी चाहिए — यां हमें बुला लेना चाहिए।”

हम नक्षत्रवाड़ी से चले, अजन्ता गुफाओं के मार्ग पर औरंगाबाद होते हुए हम १० मील आगए। हम चोक गाँव में रुके। यहाँ की दशा और खराब थी। किसी एक भी कुँए में पानी न था। पंचायत घर के बाहर स्त्रियों और बच्चों की एक व्यवस्थित कतार थी, जो दोपहर की भयंकर गर्मी में अपने कुल्हों पर बैठे थे, और पीतल के पड़ों, बाल्टियों और पट्टोल के खाली केनों को लिए हुए पानी के टेंकर की प्रतीक्षा कर रहे थे। मैंने सरपंच भावराव जयरो वाघ से पूछा कि “इस वर्ष भी पानी नहीं बरसा तो आप क्या करेंगे?”

“यदि वर्षा नहीं होगी तो हम क्या करेंगे?” मेरे ही प्रश्न को दोहराते हुए, उन्होंने उत्तर दिया। हनुमान जी से प्रार्थना करने के सिवाय हम क्या कर सकते हैं।” हनुमान जी औरंगाबाद के आस-पास के गाँव के लोकप्रिय देवता हैं।

एक बार फिर निलसन इंगलिज ने मुझे डाँटा, “तुम्हें उनका धैर्य नहीं तोड़ना चाहिए। यदि हमने उन्हें कोई नौकरी नहीं दी होती, तो ये लोग अवश्य ही लूट-खसूट आदि में लग गए होते।” इंगलिज अपने को सरकार का एक अंश मानता था। “हमने उन्हें अपने सहायता कार्यों से प्रति व्यक्ति को तीन रुपए दिन के हिसाब से दिये हैं, जो खेत से उपजित होने वाली राशी से अधिक हैं; हम इसके लिए पीने का पानी भेजते हैं; हम उन्हें सुकहाड़ी (पिसा हुआ गेहूँ, राई और विटामिन का भोजन) भेजते हैं। अब हम उनके खेत जोतते

हैं और उन्हें बीज देते हैं। इस सब के लिए हमें करोड़ों रुपए की लागत आती है।” वाघ की ओर मुड़कर उसने मराठी में उसे आश्वासित किया, “मुझे विश्वास है कि आप की चार्पिंग स्वीकार होगी। हनुमान जी बड़े शक्तिशाली भगवान हैं।”

नक्षत्रवादी थां चोक में मैंने किसी भी देहाती को भूख से मरते नहीं देखा। मैंने निलसन इंगल्लि को पूछा, “क्या भूख से मरने वालों की कोई रपट आई है। उन्होंने जल देते हुए कहा, “नहीं। हाज़ारों को बहुत कम खाने को मिला लेकिन कोई भी भूखा न रहा। जीवित रहने के लिए उचित-दर की दुकानों से ये लोग यथोचित राशन खरीद सकें हैं।”

महाराष्ट्र के इन गाँव की परिस्थिति वैसी ही विशिष्ट है जैसी कि हम गुजरात और राजस्थान के सूखे से पीड़ित क्षेत्रों में पाते हैं। राशन-डिपो में स्टॉक बनाए रखने के लिए के लिए उत्तर की ओर से गेहूँ रेलगाड़ियों और ट्रकों में लाया जाता है। परिवहन समय-सारणी में थोड़ी अव्यवस्था भी घोर विपत्ति का सूचक है।

औरंगाबाद वापिस लौटते हुए हम एक १८वीं शताब्दी की समाधी पर रुके जिसे एक स्कूल में परिवर्तित किया गया था। ग्रीष्म-अवकाश के लिए मोलाना आज़ाद महाविद्यालय बन्द था, लेकिन सचिव, जुलफिकार हुसैन ने हमें परिसर में घुमाया। नहरों और फव्वारों से, सजे बगीचे मुगल शैली के थे। नहरों में पानी नहीं था और बगीचे पर घास दग्ध हो चुका था। “हमारा एक नलरूप बड़ी मुश्किल से छुट्टियों में यहाँ रहने वाले कर्मचारियों के लिए काफी पड़ता है। तीन सप्ताह के बाद जब कालेज खुलेगा, हमारे पास साढ़े सात सौ लड़के-लड़कियाँ तथा प्राध्यापक लौट आँगे। यदि इस बीच बरसात न हुई, तो उन्हें

वापिस अपने घरों को लौटना होगा। मैं अल्ला से प्रार्थना करता हूँ कि वह हमें इस घोर संकट से बचाए।”

हम रेस्ट हाऊस की ओर लौटे। औरंगाबाद के विध्वंस हुए पानीरों के ऊपर सूर्य अस्त हुआ। कौओं की कतारे शहर की ओर अपने ठिकानों पर लौट रही थीं। पानी बरगद के वृक्ष से एक उल्लू अपनी आवाज़ से दिन ढल जाने की सूचना दे रहा था। इस प्राचीन शहर को संध्या के फैलते साथे ने अपने आलिंगन में ले लिया। शुद्ध (दूसरी शताब्दी ई०) ने कैसे उपयुक्त ढंग से इस दृश्य को चित्रित किया है:

धीरे-धीरे अन्धेरा धूप को घी जाता है।

अपने घरघोंसलों की ओर आकृष्ट कौबे,
शांत हो गए।

और अब खोखले वृक्ष पर उल्लू बैठा है,
और अधिक साहसी बनकर शरीर में अपनी गर्दन गुसाये,
घूरता है; सिर हिलाता है; और घूरता है।

बाद में शाम को, औरंगाबाद के तगड़े जवान (डी) कलक्टर रमेशचन्द्र सिन्हा, सरकारी रेस्ट हाऊस, जहाँ मैं रुका हुआ था, मुझसे मिलने के लिए आए। उनके साथ भारतीय प्रशासकीय सेवा के एक मात्र यहूदी सदस्य, जाइस इब्राहिम (२४) थे, जो उनके निर्देशन में प्रशिक्षित हो रहे थे। वे दोनों ढेर सारे नक़शे अपने बाहों में समेटे घुसे और वे उन्हें खोल-खोलकर मुझे समझाते लगे।

सिन्हा ने कहा, “इस ज़िले में तीन सौ गाँव हैं जिनके पास एक बूँद पीने का पानी नहीं है। मेरे पास एक सौ-पचास टैंकर हैं जो कि हर समय चलते रहते हैं, लेकिन सबसे बड़ी समस्या मेरे लिए शहर है। इसकी जन संख्या १६०,००० से

ऊपर है। वैसे भी इसके पानी की सामान्य आपूर्ति बहुत ही कम है, और उस पर हमें उसे आधा कर देना पड़ता है। चौबीस घण्टों में हमारे नल ठीक ४० मिनट चलते हैं। हमें अनिर्गन्त कुँए खोदे हैं— लगभग ११६ मीटर गहरे लेकिन फिर भी पानी नहीं मिला। हमने नदियों के सूखे तलों में से छेद कर-करके रेत से जितना कुछ निचोड़ सकते थे पानी निचोड़ लिया है। इतिहास के पन्नों में सन् १९७२ अत्यन्त भयंकर सूखे का वर्ष है।”

“और कितने दिन चला सकते हो?”

उन्होंने मुझे आश्वासन देते हुए कहा, “जब तक मानसून का प्रारम्भ होता है, और यह अवश्य ही प्रारम्भ होगा चाहिए। हमने टंकिया खोदी हैं और नदियों में बांध खड़े किए हैं जिससे कि जो कुदृष्ट भी बरसे उसे हम बटोर सकें। इसपर काफी लागत लगी है। केवल इस जिले में मैंने लोगों को ट्यास से मरने से बचाने के लिए सहायता योजनाओं पर ४५६,००० पुरुषों और स्त्रियों को काम पर लगा रखा है और हर दिन मैं १२ लाख रुपए खर्च करता हूँ।”

मैंने सिंह से पूछा, “आप ने पहले से ही क्यों नहीं टंकिया, कुँए और सिंघाई की नहर खोदी?”

उन्होंने उत्तर दिया, “मैं इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता हूँ। हमारे राज्य में कभी भी पानी के भण्डार की सुविधाएँ पर्याप्त मात्रा में नहीं थी। हमने इस भूल के कारण काफी कष्ट उठाया और अब हम अच्छी तरह तैयार हैं। मुझे विश्वास है यदि इस वर्ष हमारे यहाँ अच्छा मानसून होगा तो मैं पर्याप्त पानी जमा करने में समर्थ रहूँगा जिससे कि हम सूखे के दो वर्ष भी निकाल सकते हैं। मुझे विश्वास है ऐसा ही अन्य सूखे से पीड़ित क्षेत्रों में भी होता है। मनुष्य जीता है और सीखता है।”

मैं मिस इरार्हिम की ओर मुड़ा और उनसे कहा कि वह इस समस्या के बारे में क्या जानती है। उन्होंने मेरी स्कॉच की बोतल की ओर इशारा करते हुए कहा, "बहुत अधिक नहीं बस ऐसा ही जल मेरे नल में आता है। वह बिल्कुल अपेक्ष्य है।"

मैंने उसे आश्वासित किया, "लेकिन यह सबसे अधिक पीने योग्य है।" रात्रि भोजन पर हमारे साथ एक दर्जन से भी अधिक किसान नेता हमारे साथ थे। उनमें से मानेकराव पालोदकर लगभग ५० के चे — साँवले, शक्तिशाली और गठीले बदन के। फणन एकड़ का उनका फार्म पालोद गाँव में था जिससे उनका उपनाम बना था और वह औरंगाबाद से संसद के वर्तमान सदस्य थे। सभी लोग हाथ से काते हुए सफेद कपड़े पहने और गाँधी टोपियों में थे तथा धूप से ताम्रवर्ण के प्रभावशाली और शरीरवाले शक्तिशाली एवं गठीले बदन के थे। भोजन के समय गर्मी, धूल, बादल और वर्षा की बातें हुईं।

मैंने पूछा, "आप के कितने से वर्षा कब तक होगी?"

पालोदकर ने कहा, "पहले मानसून श्रीलंका में आता है, और तब सात दिन बाद वह पश्चिमी तट तक पहुँचाता है। इसके बम्बई पहुँचने के पश्चात् हमारे यहाँ यह सप्ताह बाद आता है। अभी तो यह श्रीलंका में भी नहीं पहुँचा। देखिए क्या होता है।"

दूसरे ने कहा, "लेकिन इससे पूर्व भी यहाँ वर्षा होती है।"

पालोदकर ने उसके कथन का संशोधन करते हुए कहा, "वह तो रोहिणी है — यह पूर्व-मानसून वर्षा महत्वपूर्ण नहीं है। हमें तो खूब घुँटदार वर्षा-ऋतु चाहिए। वर्षा के चार महीनों को हमने नक्षत्रों के आधार पर आठ परबवाड़ों में बाँटा है। पूर्व-मानसून रोहिणी नक्षत्र पर आता है। रोहिणी पर कभी

विश्वास नहीं करना चाहिए; यह तो भ्रांतिजनक नक्षत्र है — यह अन्धड़ से भरा होता है, और टिड्डीं दलों और ओलों को ले आता है। तब मृगा आता है। यह सच्चा मानसून है; निरंतर पानी बरसता है जिससे छाती ठण्डी होती है। यह प्रायः १० जून के आस-पास आरम्भ होती है।”

“हमें एक लम्बे वर्षा-ऋतु की आवश्यकता है।” उसने एक मराठी कहावत सुनाई जिसका अर्थ यह था कि सच्चे मानसून की कसौटी तो यह है कि टाट के बोरो से किसान अपने सिर और कंधों को डुपते हैं कि वह बोरो इतनी देर तक गीले रहे कि उनमें कीड़े पड़ जाए।

भोजन समाप्त हुआ और हर कोई एक दूसरे को यह आश्वासन देने का प्रयास कर रहा था कि मानसून बहुत शीघ्र आ रहा है। हम बगीचे में चले आए। गर्मी और उमस थी। पिछली सर्दियों में, जिस तालाब में कंबल खिले थे और मच्छरियाँ तैरती थी, वह अब लगभग सूख गया था। किनारों पर जहाँ घोड़ी सी कीचड़ बनी थी, वहाँ कुछ एक जुगनू चमक रहे थे। सहमानों में से एक ने कहा, “जब मानसून आएगा, वहाँ तो जुगनू ही जुगनू होंगे।”

दूसरे ने टिप्पणी की, “हवा बन्द होगई है।”

“लगता है अन्धड़ आने वाली है।”

तीसरे ने कहा, “सम्भवता पहली बौछार।”

“चलो भाई घर चले।”

मुझे नींद आ रही थी। कमरे में बंद गर्म हवा को ही छत का पंखा मच रहा था। मेरा तर्किया शीघ्र ही पसीने से भीग गया। कुछ समय के लिए मैं मेढको का टर-टराना सुनता रहा। अरिसटोफेनज ने इस आवाज को कितना सही-सही सुना था — ‘क्लैक-एक-एक-एक-एक, कोकस, कोकस!’

अन्तानक आँधी आई। मैं उठकर धूल रोकने के लिए खिड़कियाँ बन्द कर दी। मैं पलंग पर करबटे बदलता रहा और आश्चर्य करता रहा, कि भारत के पूर्व-मानसून की 'गमी' को चित्रित करने में, किपलिंग जितनी सफलता किसी भी लेखक को नहीं मिली थी। 'फालिसडान' कहानी में वह आदमी, जिसने अन्धड़ में, गलत वक्त के समकक्ष शादी का प्रस्ताव रखा था।

“मुझे अनुभव हो रहा था कि वायु और अधिक गर्म होती जा रही है, लेकिन किसी ने भी इस ओर ध्यान नहीं दिया जब तक कि चाँद छिप गया और फुलसी गर्म हवाओं ने संतरो के पेड़ों के साथ कुछ इस तरह से पछाड़ खानी शुरू की मानो समुद्र का गर्जन हो। इससे पूर्व कि हम यह जाने कि हम कहाँ हैं अन्धड़ ने हमें घेर लिया, चारों तरफ अन्धेरा, गर्जन और चक्रवात था।”

यह किपलिंग ही है, जिसने एक बार फिर इस महीने की फुलसाने वाली 'गमी' से उत्पन्न आलस्य की अनुभूति का चित्रण किया है:—

कोई आशा नहीं है, कोई परिवर्तन नहीं है! बादलों ने हमें घेर लिया है,

और बादलों में से सरवा सूर्य नगर के सताये हुए वक्षस्फल पर चोट कर रहा है,

याद आए हुए पापों के समान जब तक रात्रि गहन होगी तब भी नींद या आराम का कोई क्षण पास नहीं कटेगा,

और, सूरखी आखों वाला चन्द्रमा, क्षण-क्षण,

धुन्ध के नीचे घूर रहा है और पनीली रोशनी से हमारा उपहास कर रहा है।

और सहनशील वृक्षों की यातनाएं,

बहुत दूर, धरती के दुःख की चीत्कार, बजली बग़र
गर्जती है, सूखी धरती पर उसकी गूँज सुनाई देती है।
बिजलियाँ कौंध जाती हैं, सब बेकार हैं।

बादलों के ढेर कोई सहायता नहीं देते।

फुलसी हवा, का चका-माँदा बोझ और भारी होता है,
सूर्योदय एक युद्ध विराम? पीड़ित आकाश से देखो,
चमत्कारी तलवार लिए हुए, निरंकुश दिन अकड़कर
चल रहा है!

मानसून वर्षा के लिए दूसरा शब्द नहीं है। मौलिक
अरबी नाम के अनुसार, यह एक ऋतु है। एक ग्रीष्म
मानसून होता है और एक शीतकालीन मानसून होता
है, लेकिन यह केवल वर्षा-मेघों से भरी ग्रीष्म कालीन दक्षिणी-
पश्चिमी हवाएँ होती हैं जिनसे 'मौसम'—वर्षा-ऋतु बनता
है। शीतकालीन मानसून तो बस सर्दियों में वर्षा ही होती है।
यह तो तुषाराच्छादित प्रातः की एक ठण्डी बौछार होती
है। जिससे हर व्यक्ति को ठण्ड और कपकपी लगती है। फसलों
के लिए यद्यपि बहुत अच्छी है, फिर भी लोग इसके समाप्त होने
की प्रार्थना करते हैं। सौभाग्य से, यह बहुत दिनों तक नहीं
होती है।

ग्रीष्मकालीन मानसून की बात ही ओर है। इससे पूर्व
कई महीनों तक व्यास इतनी बढ़ गई होती है कि जब पानी
आता है तो उसे बढ़ी गहराई तक रस लेते हुए पिया जाता
है। फरवरी के अन्त में, सूर्य की गमी बढ़ती है और वसन्त
के स्थान पर धीरे-धीरे ग्रीष्म का प्रारम्भ होता है। फूल
मुरझाते हैं। फूलोवाले वृक्ष उनकी जगह लेते हैं। पहले
तो जंगल की आग के समान संतरे के फूल और सिंदूरी
मूँगा खिलता है। इसके पश्चात् भड़कीले गुल-मोहर

के फूल और अमलतास के सुनहरे, नर्म फूलों की बाहर आती हैं। तब पेड़ों से फूल अलग होते हैं। उनके पत्ते भी गिर जाते हैं। उनकी नगी शाखाएं आकाश की ओर हाथ पसार-पसारकर पानी की भीख मांगती हैं, लेकिन पानी कहीं नहीं होता। इससे पूर्व की जली-तपी धरती अपने होठों को ओस की बूदों से गीला करले सूर्य बहुत सबेरे जग कर उसे सोख लेता है। वह धुंधले मेघरहित आकाश में दिनभर आग बरसाता रहता है, सारे कुँए, फरने और झील सूख जाते हैं। वह घास और काँटेदार झाड़ियाँ तक को तब तक फुलसाता है जब तक कि वह आग न पकड़े। सूखे जंगलों में आग इस तरह लगती है जैसे कि माचिस की तीलियाँ जल रही हो।

एक के बाद एक, प्रतिदिन सूर्य, पूर्व से पश्चिम की ओर निर्दयता से फुलसाता हुआ चलता रहता है। धरती चिटकने लगती है और गहरे दरारों वाले मुँहों से जल मांगती है; लेकिन जल कहीं नहीं होता — केवल दोपहर की झिलमिलती धुन्ध जो रेगिस्तान में मृगतृष्णा के झील बनाती चली जाती है। गरीब देहाती अपने व्याखे पशुओं को पानी पिलाने के लिए ले जाते हैं और मर जाते हैं। धनवान लोग धूप के चश्मे पहनते हैं और खस के पदों के पीछे छुप जाते हैं जिनपर उनके नौकर निरंतर पानी छिड़कते रहते हैं।

सूर्य वायु को अपने साथ मिला लेता है। वह हवा को इतना गर्म करता है कि वह लू बन जाती है और इसे घूमने-फिरने के लिए छोड़ देता है। भयंकर गर्मी में, सौ डिग्री के गर्म चुम्बन बड़े अच्छे और मनोहर लगते हैं। इससे घमौरी निकलती है। इससे शरीर सुन्न होता है जिससे कि सिर हिलने लगता है, और आंखें नींद से भारी हो जाती हैं।

लू पीड़ित को बड़े प्यार से मारती है ठीक वैसे ही जैसे कि ठण्डी हवा रोम से रोयाँ उठा लेती है।

तब एक झूठी आशा का अन्तराल आता है। तापमान कुछ कम होता है। हवा बन्द होती है। दक्षिणी क्षितिज से काली दीवार आगे बढ़ने लगती है। सैकड़ों क्रौंच और चील उसके आगे आते हैं। क्या यही है ? नहीं, यह अन्यड़ है। एक सूक्ष्म चूरा सा गिरना प्रारम्भ होता है। सूर्य को टिड्डी दल की एक ठोस मात्रा घेर लेती है। खेतों और वृक्षों पर जो कुछ भी बचा है वह उसको चट जाते हैं। तब स्वयं अन्यड़ का प्रवेश होता है। उन्मत्त शक्ति से यह खिड़कियों और दरवाजों को, आगे और पीछे जोर-जोर से खड़खड़ाता है, और उनके शीशों का चकनाचूर कर देता है। घास-फूस की खलोहे की सादरों से बने दूधे कागज के टुकड़ों की भाँति आकाश में उड़ने लगते हैं। वृक्ष झड़ों से ही उखड़ जाते हैं और बिजली लाइनों के आर-पार गिर जाते हैं। उलझी हुई तारों से लोग बिजली से मर जाते हैं और मकानों में आग लग जाती है। तूफान आग की लपटों को दूसरे मकान की ओर ले जाता है और वहाँ एक विशाल अग्निकांड हो जाता है। यह सब तो पलभर में ही होता है। इससे पूर्व कि आप 'चक्रवर्ती राजागोपालाचार्य' खोल सके, तूफान चम जाता है। हवा में लटकती गर्द आपकी किताबों, फनीचरों, खाने आदि पर जम जाती है; यह आँख, कान, गले और नाक में भर जाती है। यह बार-बार होता रहता है जब तक कि लोगों की आशाएँ समाप्त हो जाती हैं। वह लोगों का मोह हो जाता है, वे उदास और व्यासे रहते हैं तथा पसीने-पसीने होते रहते हैं। उनकी गर्दों के पीछे निकली घमौरी रेगमल जैसी हो जाती है। एक सनाटा छा जाता है। एक गर्म

अस्मीभूत शान्ती का वातावरण बनता है। तब एक पक्षी की तेज, अपरिचित सी आवाज़ सुनाई देती है। भला यह सायेदार झाड़ी को छोड़कर सामने क्यों आई है? निजीवि थके हुए लोग आकाश की ओर देखते हैं। हाँ, यह है अपने साथी के साथ। कबड़े काले और सफेद फुरतीली शिखा और बड़ी दूमवाले बुलबुलों के समान है। यह तो मानसून के आगे-आगे सीधे अफरीक से उठकर चली आ रही चितकबरी शिखा वाली कोयल है। क्या हवा मन्द-मन्द नहीं चल रही है? और क्या इसकी गंध तर नहीं है? और क्या पक्षी की पीड़ायुक्त आवाज़ को दबाने वाली घड़घड़ाहट गर्जन की आवाज़ नहीं है? लोग इसे देखने के लिए जल्दी-जल्दी छतों पर चढ़ जाते हैं। ऐसी ही एक काली दीवार पूर्व से भी दिखाई देने लगी। बगुलों का एक झुण्ड एक साथ उड़ता चला आ रहा है। दिन की रोशनी से भी अधिक तेज बिजली चमक जाती है। बादलों के कालेबादबान सूर्य के ऊपर से हवा में तिर रहे हैं। धरती पर एक विशाल छाया फैल जाती है। और बिजली चमक जाती है। पानी की बड़ी-बड़ी बूँदें धूल में आती हैं और सूख जाती हैं। धरती पर एक सौंधी-सौंधी महक उठ रही है। एक भूखे शेर की गर्जन के समान एक और बिजली चमकी और गर्जन की घड़घड़ाहट हुई। यह आ गई! पानी की चादरे, एक के बाद दूसरी बरसती चली जा रही हैं। लोग अपने चेहरे बादलों की ओर उठाते हैं और पर्याप्त मात्रा में जल से अपने को भिगोते हैं। स्कूल और दफ्तर बन्द हो गए। सारा काम रुक गया। पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे अपने बाहों को लहराते हुए उन्मत्त से गलियों में इधर-उधर भागने लगते हैं, और 'हो, हो'

करते — मानसून के चमत्कारों का स्तुतिगान करते हैं।

मानसून साधारण वर्षा नहीं है जो आती है और जाती है। एक बार जब मानसून वर्षा आरम्भ होती है, यह तीन से चार महीने तक बनी रहती है। लोग इसके आगमन का स्वागत खुशियों से करते हैं। लोगों के समूह वनविहार के लिए चले जाते हैं और देहाती को आमकी गुठलियों और छिलकों से भर देते हैं। बूझों की रहनियों को स्त्रियाँ और बच्चे भूला बनाते हैं और गाने और खेलने में दिन व्यतीत करते हैं। मोर अपने पंखों को फैलाते हैं और अपने साथियों के साथ छेंठकर चलते हैं; जंगल उनकी तीक्ष्ण पुकारों से गूँज उठता है।

परन्तु कुछ दिनों के पश्चात् उत्साह का यह प्रवाह थम जाता है। पृथ्वी दलदल और कीचड़ का एक विशाल स्वरूप धारण करती है। झुँए और फील भर जाते हैं और अपने बाँधों को तोड़े लगते हैं। कसबों की, नालियों में अवरोध उत्पन्न होता है और सड़के गंदी नदियाँ बन जाती हैं। गाँव में, फोंपड़ियों की मिट्टी की दीवार पानी में पिघल जाती है और फूस की छते झूलकर रहने वालों के सिरों पर गिरती हैं। ग्रीष्म की गर्मी से बर्फ पिघलने लगती है और जिन नदियों में जल धीरे-धीरे चढ़ने लगता है, उन्हीं नदियों में पर्वतों पर मानसून की भयंकर वर्षा से बाढ़ में परिवर्तित हो जाती है। सड़के, रेलपटरियाँ और पुल पानी के नीचे आ जाते हैं। नदी किनारों पर बने मकान समुद्र में बह जाते हैं।

जीवन और मृत्यु की गतिमानसून आने से बढ़ जाती है। लगभग रातभर में घास उग आती है और पत्तो रहित वृक्ष हरे हो जाते हैं। साँप, कतरखूरे और बिच्छू जाने कहां से पैदा हो जाते हैं। केतुओं,

(१८)

सोनपक्षियों और छोटे-छोटे मेढकों से मैदान भरे होते हैं। रात को, करोड़ों शलभ बिजली बत्तियों के चारों ओर चक्कर काटते हैं। वह प्रत्येक के भोजन और जल में गिरते हैं। छिपकलियाँ इधर-उधर फपटकर कीड़ों से अपने पेट को इतना भरती हैं कि वह भारी होकर छतों से नीचे गिर जाती हैं। कमरों के भीतर, मच्छरों की गुनगुनाहट पागल कर देती है। लोग कीटनाशी दवा छिड़कते हैं और फर्श पर छटपटाए हुए शरीर और पंखों की तरह सीबन जाती हैं। दूसरी शाम, वहाँ और बहुत अधिक कीड़े बत्तियों के आसपास ज्वाला में अपने आप को जलाने के लिए आ जाते हैं।

मानसून जबतक रहता है, वर्षा बिना किसी चेतावनी के प्रारम्भ होती और समाप्त हो जाती है। बादल उड़के आ जाते हैं, और हिमालय पर्वत तक पहुँचने से पूर्व, मैदानी भागों में अपनी इच्छा से पानी बरसा कर चले जाते हैं। पहाड़ों पर यह बादल चढ़ते हैं। तब सदीं इन बादलों से जल की अन्तिम बूँद तक निरोड़ लेती है। कभी भी बिजली और गर्जन बन्द नहीं होती है। अगस्त के अन्त या सितम्बर के प्रारम्भ तक, यह सब कुछ होता रहता है। तब वर्षा-ऋतु के स्थान पर शरत् का आगमन होता है।

मानसून हमारे जीवन की अत्यन्त मनोहर अनुभूति है। भारत और इसके लोगों को जानने के लिए, दूसरों को यहाँ के मानसून को जानना होगा। इसके विषय में पुस्तकों में पढ़ना, याँ इसको चलचित्रों के परदे पर देखना, याँ किसी को इसके विषय में बातें करते हुए

सुनना ही पर्याप्त नहीं है। इसकी तो व्यक्तिगत अनुभूति होगी चाहिए, क्योंकि इस अनुभूति को जीमे बिना यह नहीं समझा जा सकता है कि यह मानसून हम लोगों के लिए न केवल जीवन का स्रोत है, अपितु प्रकृति के साथ हमारा अत्यन्त उत्तेजक तादात्म्य है। यूरोपवासियों के लिए वर्ष के चार ऋतुओं का जो अर्थ है, वही भारतीयों के लिए एक ऋतु मानसून का है। मानसून से पूर्व प्रकृति उजड़ चुकी होती है; वह अपने साथ बाहर की आशाएँ लाता है; इसमें ग्रीष्म की सम्पूर्णता भी है और शरत्-ऋतु की पूर्ति भी है — सभी एक में।

यह बात आश्चर्यजनक नहीं है कि भारतीय कला, संगीत और साहित्य का अधिकांश भाग मानसून से जुड़ा हुआ है। असंख्य चित्रों में चित्रित दृश्यों पर लोग, जो क्षितिज से उठ रहे काले-काले बादलों के आगे उड़ रहे, बगुलों की पंक्तियों को देख रहे हैं। भारतीय संगीत के अनेक स्वरमधुर रागों में, राग मल्लहार अत्यधिक लोकप्रिय है क्योंकि इसको सुनते ही कहीं दूर हो रही बिजलियों की गर्जना और वर्षा-बूंदों से हो रही टपटप की आवाज़ की गूँज सुनाई देती है। हमारे नयनों में यह धरती और हरे पेड़-पौधों की सौंदर्य महक; तथा हमारे कानों में मोर की आवाज़ और एक कोयल की पुकार लगी है। रागदेश भी है जो आमोद-प्रमोद के दृश्यों की स्मृति दिलाता है। अमराईयों के झूलों और हँसती लड़कियों के गानों की याद दिलाता है। विशेष रूप से ऐसे दृज्जे बनाए जाते थे जहाँ से सामन्त लोग मानसून की धुँआदार वर्षा का दृश्य

देख सकें। जहाँ बैठकर वे मानसून की मधुरता से भरे अपने दरबारी संगीतकारों के संगीत को सुनते, शराब पीते तथा अपने हरम हरम की किसी प्रेमिका से प्यार करते हैं। भारतीय गीतों का एक सामान्य विषय तो यह है कि जब वर्षा-ऋतु अपने पूरे यौवन पर हो तो प्रेमी एक दूसरे की चाहना करते हैं। मानसून के समय संयोग के अतिरिक्त और कोई प्रसन्नता अधिक नहीं होती है, तथा वर्षा-ऋतु में विरह से बढ़कर और अधिक कोई भी दुःख गम्भीर नहीं है।

बादलों और वर्षा के विषय में हमारे विचार परिन्तम निवासियों से मूलतः भिन्न हैं। एक के लिए, बादल आशा के प्रतीक हैं, दूसरे के लिए, यह निराशा के प्रतीक हैं। भारतीय आकाश का अवलोकन करते हैं और यदि वर्षामेघ सूर्य को छुपाता है तो उसका दिल खुशी से भर उठता है। परिन्तम का निवासी आकाश की ओर देखता है और यदि बादलों के किनारों पर चाँदी जैसी सफेदी गयी देखता है, तो उसकी निराशा गहरी हो जाती है। एक भारतीय यदि किसी का सम्मान करता है तो उसे एक महान दाय्या के रूप में स्वीकार करता है, मानों बादलों से घिरे सूर्य की दाय्या। दूसरी ओर, परिन्तम का निवासी, दाय्या को अशुभ मानता है और किसी भी संदेहारूपद चरित्र वाले व्यक्ति के लिए वह शब्द प्रयोग करता है - दाय्यामय। उसके लिए उसकी प्रेमिका धूप की तरह है और उसकी मुस्कान धूप की उज्ज्वल मुस्कान होती है। जब भी उससे ग्रीष्म-कालीन जलवायु की उपलब्धी होती है तो वह बादलों और बारिश से भागता है। जब वर्षा आती है,

(29)

तब एक भारतीय, गली-कूनों में निकलकर खुशी से चीखता, चिल्लाता है और अपने आप को पूरी तरह भिगो देता है।

भारत की अधिकांश सुन्दरतम कविताओं का विषय मानसून रहा है। अमरु (16वीं शती ई०) ने मानसून के आगमन से एक भारतीय के सीने में उठने वाले प्रेम के विचारों का इस प्रकार से वर्णन किया है:

ग्रहीमकालीन सूर्य, जिसने हमारी सुखद रातों को छीन लिया,
और जिसने नदियों के पानी को पूरी तरह से चुरा लिया,
और धरती को जला दिया, और बन के वृक्षों को
झुलसा दिया,

अब वह छिप गया है; और आकाश में घने रूप से फैले
वर्षा-बादल उसे ढूँढ़ रहे हैं, और बिजली की
चमकदार रोशनी से वह अपराधियों की खोज कर
रहे हैं।

तुम रात के सन्नाटे में कहाँ जा रही हो?

"अपनी प्रेमिका से मिलने, जो मेरे लिए जीवन और मृत्यु है।"
क्या अकेले जाने में तुम्हें डर नहीं लगता?

"मैं अकेला कहाँ हूँ? प्यार तो मेरा साथी है।"

गीतांजलि रवि-द्रनाथ टैगोर (१८६१-१९४१) कहते हैं:

ठेर सारे बादल और यह अन्येरा छा रहा है,
मेरी प्रेयसी, दरवाजे के बाहर मुझे अकेले
क्यों प्रतीक्षा करा रही हो?

व्यस्त क्षणों की चरमसीमा पर मैं भीड़ के

(२२)

साथ घुलमिल जाता हूँ,
लेकिन इस अकेले अन्धेरे दिन में मुझे
तेरी ही प्रतीक्षा है,
मैं आशारत हूँ,
यदि तू मुझे अपना चेहरा नहीं दिखाएँगी,
यदि तू मुझे पूरी तरह छोड़ देगी,
मैं नहीं जानता, कैसे बितापाऊँगा वर्षाक्षत
के लम्बे पलक्षण।
आकाश में फैले काले बादलों की उदासी
को मैं घूर रहा हूँ और इन चञ्चल हवाओं
के साथ-साथ मेरे मन के विलाप भी
भटक रहे हैं।

वर्षाक्षत में गाँव का एक दृश्य शुद्रक (दूसरी शताब्दी ई०) ने इस प्रकार चित्रित किया है:

अर्द्ध रात्रि में काले बादल छाये हुए हैं;
गाहरी गर्जना हो रही है।

अन्धकार के कारण रात्रि का चन्द्रमा खो गया है;

अपने खोये हुए बछड़े के लिए एक गाय रँभा रही है।

अपने प्रेमी से मिलने के लिए जा रही एक

प्रेमिका की शिकायत देखिए:

"बादल की गर्जना, तुम बड़ी दुर हो।

तुम जानती हो कि मैं अपने प्रेमी से मिलने

के लिए जा रही हूँ,

और फिर भी तुम अपनी गर्जना से मुझे

डराती है,

और अब तुम वर्षा-हाथों से मुझे दूँकर मुझसे

प्यार कर रही हो।”

मानसून-ऋतु में प्रेमी एक दूसरे के लिए तड़पके रह जाते हैं, स्त्रियाँ अपने पति के घर वापिस आने की प्रतीक्षा में रहती हैं। अमरु (सातवीं शताब्दी ई०) की प्रायः उद्धृत पंक्तियों में से कुछ:

रात में वर्षा हुई, और दूर कहीं गहरी गर्जनाएँ
होती रही और वह सो न सका,
बस करबटे बदलता रहा, बार-बार आँसू भरता रहा,
जब वह यह सुने लगा, उसकी आँखों में आँसू
आ गए,
घर में अकेली जवान पत्नी के बारे में सोचता
रहा,
और दिन निकलने तक वह जोर-जोर से
रोता और सिसकियाँ भरता रहा,
और उस दिन से गाँव वालों ने यह कड़ा
नियम बनाया, गाँव में रात के ठहरने के लिए
किसी भी यात्री को कमरा नहीं देना चाहिए।

गीतांजलि की एक और कविता में टेगोर ने
कुछ ऐसे ही भावों को पकट लिया है:

मेरे मित्र? प्रेम की यात्रा में तुम इस लूफानी
रात में बाहर हो, एक निराश व्यक्ति की
तरह आकाश आँसू भर रहा है।
मैं आज सो न सका, बार-बार द्वार खोलकर
मैंने तुम्हें ढूँढ़ा, मेरे मित्र!
मुझे कुछ भी दिरवाई नहीं देता, जाने तुम

कहाँ से आ रहे हो!

किस काली नदी के धुँधले तट से,
घने जंगल के किस दूर किनारे से,
निराशा की किस घनी गहराई से,
मेरे मित्र,
तुम मेरी ओर बढ़ रहे हो?

मानसून, मौसमविशेषज्ञों की भविष्यवाणियों
अथवा हमारे पुरखों द्वारा निश्चित किसी भी
नियम का अनुसरण नहीं करता। अखबारों में तो यह
समाचार था कि बादल श्रीलंका के ऊपर हैं और केरल के
ऊपर पश्चिम की ओर चलने वाली खूब तेज़ हवाएँ
चलेगी, तब बम्बई का आकाश जो लगभग एक सप्ताह
थाँ उससे अधिक दिनों तक साफ रहना चाहिए था,
बादलों से भर गया। सड़क के पटरी-बाजारों में खड़
के जूते और छाते बिकने लगे। केवल निकर पढ़ने ऋक्
बालकों से गलियाँ भर गई। लोग यह नहीं देख रहे
थे कि वह कहाँ जा रहे थे परन्तु वह आकाश
की ओर देख रहे थे। सिनेमा-घर पर उतारते हुए टेबसी
चालक ने मुझसे कहा, "बादल बहुत ऊँचाई पर है। वैसे
भी अभी तो मानसून का समय नहीं हुआ। मानसून
अपने समय से बहुत पहले ही आ गया।" दो घण्टे के
पश्चात् जब मैं चलचित्र से बाहर निकला तो बिजली और
गर्जन के साथ लगातार मूसलाधार वर्षा हो रही थी।
सड़कों पर पानी भर गया था और जल रही बत्तियों
का प्रतिबिम्ब उसमें चमक रहा था। अधिकांश लोग
अनजाने में फस गए। लेकिन भीगने का किसी को भी

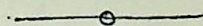
दुःख नहीं था। कच्चे गन्दे पानी में इस तरह गोते लगा रहे थे जैसे कि वह नहाने का एक अत्यन्त आकर्षक तालाब हो।

औरंगाबाद जिसे और सात दिन के लिए प्रतीक्षा करनी थी में उसी दिन वर्षा हुई जिस दिन बम्बई में हुई। जब तक कि मैं नझत्रवाड़ी पहुँचा तब तक वर्षा पाँच दिन तक लगभग निरन्तर हुई थी। देहाती लोग त्रिवेदी के घर में फिर से इकट्ठे हो गए थे। मौसम में भी गर्मी और उमस थी, तथा चारों ओर कीचड़ भरा था। उनके चेहरे पर परिवर्तित भाव स्पष्ट थे; जहाँ निराशा और तनाव की स्थिति थी, वहाँ अब आशा और राहत के भाव स्पष्ट थे। गाँव का जिसी ज्योतिषी सीताराम, अपनी विजय पर मुस्करा रहा था और हर किसी को कह रहा था, कि किस तरह उसने वर्षा के बारे में पूर्वानुमान किया था। त्रिवेदी ने कहा कि, "वर्षा के कुछ दिन और होने चाहिए और हम कपास तथा मसूर की ग्रीष्म फसलों को बोना आरम्भ करेंगे।"

"अभी नहीं," सीताराम ने टोकते हुए कहा और वर्षा से सम्बन्धित और एक मुहावरे को उसने प्रस्तुत किया जिसके अनुसार भैंस के एक ही सींग पर गिरनेवाली वर्षा का विश्वास नहीं किया जाना चाहिए, जो कुछ क्षणों के लिए बरसती है और फिर समाप्त हो जाती है। उन्होंने कहा, "वर्षा 'जिम-जिम-जिम-जिम' कर टपकनी चाहिए, जिससे कि धरती भीग जाए।" निलसन इंगलिज ने स्वीकृति भरी, "वर्षा की बौछार कहीं-कहीं हो रही है। कुछ कूँर भर गए हैं और कुछ अभी भी

सूखे हैं। अभी से आशावादी बनना ठीक नहीं है। अक्टूबर से पहले हमें मानसून की सही स्थिति का परिणय नहीं मिलेगा।”

त्रिवेदी ने निर्णायक ढंग से कहा, “सरकार ने नदियों पर बड़े बांध तथा सिंचाई नहरों के निर्माण करने की घोषणा की है। दक्षिण की ओर हजारों मील तक जाने वाली नहर के माध्यम से गंगा को कावेरी से मिलाने की एक योजना है। हमने भी अपनी योजनाएँ बनवाई हैं। इसे पूर्व हम लोगों ने क्यूओं और तालाबों की ओर ध्यान नहीं दिया जिसके फलस्वरूप वर्षा का पानी व्यर्थ होजाता था। इस बार हम इसे जमा करेंगे। सूखे ने हमें बहुत कुछ सिखाया भी है।”



रहस्यमय से भेंट

दादाजी — चमत्कारिक पुरुष

मुझे विश्वास नहीं है। मुझे इसकी आवश्यकता भी कभी नहीं पड़ी। विश्वास तर्क का खण्डन करता है और मेरे लिए तर्क सर्वोपरि है। लेकिन मैं दूसरों के विश्वास रखने के अधिकार को चुनौती नहीं देता हूँ क्योंकि मैंने देखा है कि कई लोगों को इससे कितना लाभ हुआ है। मैं चमत्कारों में ठीक उसी तरह से विश्वास नहीं करता जिस तरह से जादुओं पर। लेकिन मैं इस बात का भी खण्डन नहीं करता कि कुछ ऐसी घटनाएँ भी होती हैं जिनसे वैज्ञानिक भी चमत्कृत हो उठते हैं। अमिराँय चौधरी, अनेकानेक चाहनेवालों के लिए दादाजी से मेरी भेंट का वर्णन करने से पूर्व यह सब भूमिका के रूप में मैं कह रहा हूँ।

दादाजी पर मैंने दो पुस्तकें प्राप्त की। यह पुस्तकें प्रसिद्ध डॉक्टरों, प्राध्यापकों, व्यापारियों के योगदान का संग्रह थी, जिन्होंने कुछ चमत्कारों का अनुभव किया था। मेरी रुचि बढ़ गई।

कुछ दिनों के पश्चात्, दादाजी से मिलने के लिए फिल्म अभिनेता अबी भट्टाचार्य मुझे लेने के लिए कार्यालय में आ गए। उनके मनोहर चेहरे पर प्रसन्नता की

जो चमक थी उसे मुझे संदेह हुआ कि उन्होंने मुझे पहले से ही अपने धर्मभाइयों में गिन लिया है।

अपनी भेंट को मैं बिना किसी पूर्वग्रह अथवा पक्षपात के वर्णित कर रहा हूँ।

बांदरा में दादा जी के फ्लैट में स्वागत कक्ष में एक दीवान के सिवाय कोई फर्नीचर न था, और वह भी स्पष्टतया दादाजी के लिए ही था। उस समय वहाँ पर आधा दर्जन स्त्री-पुरुष थे, जो सभी बंगाली थे। और तब दादा जी ने प्रवेश किया। हर कोई खड़ा हुआ। एक आदमी ने अपना सिर दादा जी के पैरों पर रखकर, साष्टांग प्रणाम किया।

दादा जी लम्बे और हल्के रंग के व्यक्ति हैं। उनके बाल लम्बे और काले हैं। उनका आकर्षक युवातुल्य चेहरा उनके सत्तर-वर्ष की आयु को फुल्ला रहा है। उनकी आंखों में मंत्र-मुग्ध करने वाली शक्ति है। गृह्य समाज में जिसे पद्मगंध (कमल की महक) से कमरा भर जाता है।

दादा जी स्वयं दीवान पर बैठे हैं और मुझे इशारा करते हैं। रिवसक कर मैं उनकी टांगों के पास बैठ गया। एक कृपापूर्ण किन्तु सम्मोहित करने वाली दृष्टि से वे मुझे घूरने लगे। वे यह जानना चाहते थे कि मैं उसे क्यों मिलने के लिए आया हूँ। मैंने उनसे कहा कि मुझमें विश्वास का अभाव है, मैं किसी देव्य शक्ति के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता और मेरी उनमें तथा उनके शिष्यों के प्रति उत्सुकता है।

उन्होंने मुझे पूछा, "यदि श्री सत्यनारायण तुम से बात करे तो?" मुझे आश्चर्य हुआ। उन्होंने मुझे

दुबारा पूछा, "यदि वह तुम्हें एक स्मृति चिह्न भेंट कर तो?" उन्होंने अपना दायाँ हाथ हवा में उठाया, और जो हथेली मुझे खाली दिखाई दी उस पर एक वयोवृद्ध पुरुष के चित्र का एक मेडल था। दादाजी ने मुझे आश्वासन देते हुए कहा, "यह तुम्हारे लिए श्री सत्यनारायण की भेंट है।" मैंने विरोध किया, "यह उनकी भेंट नहीं है, यह आप ने दादाजी मुझे दिया है।" उन्होंने मुस्कराकर कहा, "मैं कोई भी नहीं हूँ; यह सब श्री सत्यनारायण की करणी है।"

उन्होंने मुझसे पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है।" मैंने उनसे कह दिया। उन्होंने उस मेडल के दूसरे हिस्से को, अपने अंगूठे से रगड़ा। पहले जहाँ रिक्त स्थान था उधर अब मेरा नाम उभर आया है। बस मेरे नाम को ठीक से लिखा नहीं गया है। एक मिनट के पश्चात् पहले जैसे रहस्यात्मक ढंग से भी हथेली में सोने की एक चैन प्रकट हुई। मुझे देते हुए उन्होंने कहा, "इसमें डालके इस मेडल को आप गर्दन में पहनेगे।"

दादाजी ने मुझे आदेश दिया कि, "मेरे साथ आओ।" मैं उनके पीछे-पीछे चला। वे मुझे अपने सोने के कमरे में ले गए।

दुबारा हम भिन्न स्तरों पर थे; वे अपने पलंग पर बैठे थे, और मैं उनके पास फर्श पर था। उन्होंने मुझसे कहा कि वे एक अद्वैतवादी हैं। श्री सत्यनारायण सारे विश्व में व्याप्त हैं। यहाँ कोई गुरु नहीं है। हर कोई अपना-अपना गुरु है क्योंकि वे श्री सत्यनारायण का एक भाग हैं। महानाम (महानाम) मुक्ति का एक मार्ग है। यह किसी भी भाषा में हो सकता है।

आप अपनी मातृ-भाषा में ही इस नाम को ले सकते हो। उन्होंने मुझे एक कागज की कोरी-पत्ती देते हुए श्री सत्यनारायण के चित्र के सामने झुकने को कहा। मैंने वैसा ही किया। इस कागज पर अब गुरुमवरगी में दो शब्द लिखे हुए थे, "गोपाल, गोविन्द।" एक मिनट के पश्चात् कागज पर कुछ नहीं लिखा था। स्पष्ट रूप से संदेश पहुँचाया गया था और अब कागज पर इसके होने की आवश्यकता नहीं थी। और यह इसी प्रकार चलता रहता है। उनके हाथ छूने से मेरी दाढ़ी भी उसी पद्मार्थ से महक उठी।

एक अविश्वासी के लिए यह हिला देने वाली अनुभूति है। इससे चमत्कार व धर्म पर मेरा अविश्वास नहीं डगमगाया और न ही भगवान, गुरु और नाम से सम्बन्धित कुछ उक्तियों को स्वीकार करने के लिए मेरे विवेक को झुकाया जिसे कि हमारे देश में दर्शन समझा जाता है। लेकिन पाठक अपना निर्णय स्वयं ले सकता है।

नाचते हुए दीयों का चमत्कार

मैं अभी एक युवती से रात्रि-भोज पर मिला जिसने मुझसे पूछा, "तुम चमत्कारों पर विश्वास नहीं रखते हो?" वह एक आकर्षक युवती थी, जिसके चेहरे पर एक ऐसी मुस्कान खेल रही थी जो प्रायः ऐसे लोगों के चेहरे पर होती है जिनके लिए 'पारिभाषिक शब्दावली में यदि कहूँ' कहा जाता है कि वे — 'आ गए' हैं। दूसरा व्यक्ति जिनके पास मैंने ऐसी मुस्कान देखी

वह दलीप कुमार की बड़ी बहन है। आपा के चेहरे पर अलौकिक आभा चमकती है। वह अपना अधिकांश समय प्रार्थना में बिताती है।

मैंने सुनिश्चित रूप से उत्तर दिया, "नहीं, मैं चमत्कारों पर विश्वास नहीं करता हूँ। आप करती हो?"

मेरे प्रश्न को टालते हुए उन्होंने कहा। "आप यह देखना चाहेंगे? मैं आप को दिखाऊँगी यदि आप यह वादा करें कि आप उसके बारे में लिखेंगे नहीं।" मैंने उन्हें एक विधिवत् वचन दिया।

कुछ दिनों के पश्चात् चमत्कार देखने के लिए मुझे एक मकान में ले जाया गया। मुझे लिखने की आज्ञा तो मिली है बस भागलेने वालों तथा जहाँ मैंने 'चमत्कार' देखा उस घर का पता न लिखने के लिए मैं वचनबद्ध हूँ।

समुद्र की ओर मुंह किए हुए यह एक छोटा सा फ्लैट है। पूरे माले पर अगर की सुगन्ध फैल रही थी। इसका कैलना कोई आश्चर्य न था क्योंकि गलियारे और सभी कमरों में जल रही ढेर सारी अगर-बत्तियों से धूँकेबादल चारों तरफ फैल रहे थे। मुझे एक कमरे में लेजाया गया। इसमें अधिक स्थान दो बड़े पलंगों और एक विशाल अलमारी, जिस पर रिकार्ड-प्लेयर था, ने घेरा हुआ था। जो पहले स्पष्टता शृंगार का मेज था उसका दर्पण हटाया गया था; शेल्फ जो शृंगार साधनों और इतर बोटलों के लिए बना था एक वेदी में परिवर्तित किया गया था। इस पर

संगमरमर से बने शिव के सिर, एक दर्जन शणपर्ति की लघुप्रतिमाएँ और नीलकंठ बाबा के पोस्टकार्ड आकार का एक चित्र था। धार्मिक वस्तुओं के सामने बहुत से फूल और चार छोटे चाँदी के दिये थे। इसके नीचे, एक ओर, अपना हृदय खोलते हुए ईसा मसीह का एक चित्र था जिसमें उनके हृदय में मनोड़ा का चित्र दिखाया गया था। इनके सामने चाँदी के दिये रखे गए थे।

इस घर की महिला वेदिका के सामने बैठी और एक छोटी सी प्रार्थना की। एक नौकर ने रिकार्ड-प्लेयर पर एक रिकार्ड रखा और लता मंगेशकर के गीत "जय जयदेव" को उसे कमरा गूँज उठा। हर एक तालियाँ बजाकर आरती में सम्मिलित हुआ। महिला ने शिव के सिर के चारों तरफ दीयों की एक चाली घुमाई। वेदी पर रखे चार चाँदी के दिये जलाए गए और आरती करती रही।

चाँदी के दिये एक करके हिलने लगे। इसमें से एक बेले नृत्य की भाँति चक्र खाते-खाते धीरे-धीरे वेदी के किनारे तक आ जाता है। और इसी तरह, दूसरा, तीसरा और चौथा। दीयों को पुनः अपनी जगह रखा जाता है। चौड़ी देर वे फिर नाचते हुए महिला की ओर आ जाते हैं। वे किनारे पर आकर रुक जाते हैं क्योंकि वहाँ पर उनका सहारा समाप्त हो जाता है। कोई भी नहीं गिरता।

मैंने पूछा, "यह दिये कबसे ऐसा कर रहे हैं?" महिला ने उत्तर दिया, "पहली फरवरी से। एक वर्ष से मैं यहाँ पूजा कर रही हूँ परन्तु दो महीने पूर्व

मैंने देखा कि यह दिये क्या कर रहे हैं।”

किसी ने कहा, “बस यही जब इन्हें जलाती है। यह तो इनकी भक्ति है जिससे ऐसा होता है।”

महिला ने विरोध किया। हमने दुबारा यह प्रयोग किया। इस समय जो महिला मुझे ले आई थी, उसी ने दिये जलाए। वे फिर मेज के किनारे तक नाचते हुए आ गए। इस तरह मकान की मालकिन के साथ ही इस समझौते का सम्बन्ध है यह सम्भावना समाप्त हो गई। मैंने उनसे पूछा कि धार्मिक वस्तुओं को हटाकर क्या उन्होंने यह प्रयोग किया है, जिससे कि दीयों और उन वस्तुओं के बीच के सम्बन्ध की जाँच होती है। नहीं, उन्होंने ऐसा नहीं किया था। और न ही ऐसा करने की उनकी कोई इच्छा थी।

मैंने दीवारों तथा वेदी एवं दर्पण के बीच, के स्थान की जाँच की। मुझे कोई उत्तर न मिला लेकिन मुझे विश्वास था कि यह सब वायु लहरों के कारण हो रहा था; दीवार के उस ओर वाले कमरे को ठण्डा किया गया था, जब कि जिस कमरे में वेदी थी वह ठण्डा नहीं था। मैंने घर के मालिक के सामने वह सम्भावना रखी, जो एक प्रभुत व्यक्ति है, और विशेषकर वह एक शंकालु भौतिकवादी व्यक्ति है। उन्होंने स्वीकार किया, “हो सकता है कि एक वैज्ञानिक इसका कारण बताए। परन्तु, हम क्यों इस रहस्य की जाँच करें? इससे हमें मानसिक शांति प्राप्त होती है।”

गुरु की खोज - आचार्य रजनीश

मैं गुरु की खोज में नहीं था - और न ही सत्य की तलाश में था - उसका जो भी अर्थ होता हो। मेरा उद्देश्य केवल यह था कि मैं यह जानूँ कि अनेक समझदार लोग स्वामियों के पीछे-पीछे क्यों भागते हैं, गेरबे वस्त्र क्यों पहनते हैं, पद्मासन में बैठकर अपने शरीर को कष्ट क्यों देते हैं और बाद में यह घोषणा क्यों करते हैं कि उन्होंने उत्तर पा लिए हैं - किसके? यह तो कोई नहीं जानता। मैंने अपने आप को आचार्य रजनीश के सम्मुख पाया।

एक बहुत बड़ा विशाल हाल था जिस की दीवारों में छत तक किताबें ठूँसी हुई थीं। पढ़ने के लिए कैसी अद्भुत किताबें:- कथा-साहित्य, इतिहास, दर्शन, धर्म, राजनीति, कविता, अश्लील साहित्य (द रैशिनैल ऑफ द इटीज जोक)। केसरी कमीज और लूंगियों में आकर्षक युवक और युवतियाँ, काले दाढ़े वाले हार पहने जिसमें आचार्य जी की तस्वीर लटक रही है। एक हलकी धूप की रोशनी सा एक शांतिमय वातावरण कमरे में फैल रहा था।

मैंने आचार्य रजनीश के पावों को छुआ और उनके पास बैठ गया। दूसरे लोग फर्श पर बैठे हुए थे। दो माइके हमारे मध्य में थी और ज्योंही मैंने अपने प्रश्न आरम्भ किए टेपरेकार्डर चलने लगे। "आचार्य जी, वास्तव में मुझे कोई समस्या नहीं है। मैं यह जानने के लिए उत्सुक हूँ कि आप

के पास मार्गदर्शन के लिए इतने लोग क्यों आते हैं?"

उन्होंने अपनी भूरी आँखों से मुझे घूरा।
"आप सोचते हो कि आपको कोई समस्या नहीं है; बहुत से सम्भदार लोग इस बहकावे को फेलते हैं जिससे वह अहंकारग्रस्त हो गए। तब उनके जीवन में संकट आते हैं और वह असहायता से लड़खड़ाते हैं। यह ऐसे ही है जैसे कि एक व्यक्ति अपने शरीर के भीतर रोगों से अपरिचित होता है और जब वह रोग प्रकट होता है, तब उपचार के लिए काफी देर हो चुकी होती है।"

"मैं इस अनुरूपता से प्रभावित नहीं हुआ।" मैंने विरोध करते हुए कहा। आप गुरु को मनोरिकित्सक के बराबर मानते हैं। मुझे मनोरिकित्सक की सहायता की आवश्यकता अनुभव नहीं होती।

एक गुरु मनोरिकित्सक के अतिरिक्त भी कुछ होता है। एक गुरु को अपने शिष्य के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होता है क्योंकि यह आपसी प्रेम पर निर्भर होता है। उनके पास कोई मानक-मंत्र नहीं होता है जो वह हर किसी को देता फिरता है जो उसके पास आता है। बहुत से गुरु इस का व्यापार करते हैं। और यही वह स्थिति है जिससे आप जैसे लोग उखड़ जाते हैं। आप गुरुओं की संस्था के विरुद्ध हैं। आप एक ऐसी संस्था के विरुद्ध नहीं हो सकते हैं जहाँ दो व्यक्ति एक दूसरे की समस्याओं का

समाधान करने के लिए आते हैं।

ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समाधान मैं स्वयं न कर सकू सिवाय एक के — और मैं नहीं समझता आप या और कोई मुझे इसका उत्तर दे सके। मैं मृत्यु की अद्भुत घटना से आश्चर्यचकित हूँ। मैं अज्ञात के इस उर से अपने को मुक्त नहीं करा सकता।

“आप सही कहते हैं! न मैं और न ही कोई और दूसरा आप को यह बता सकता है, कि मृत्यु के बाद क्या होता है। परलोक में जीवन के सिद्धांत, आत्मा की अमृता, आदि ऐसे शब्द हैं जिसे खेलकर सामान्यजन के भय दूर किये जाते हैं। बुद्ध ने भी यह मान लिया कि वह मृत्यु की पहली को हल नहीं कर सके। इस भय पर विजय प्राप्त करने के लिए उन्होंने बस लोगों को इससे और अधिक व्यापक परिचय कराया। लोग मृत्यु के दृश्य से भागते हैं। हमारे श्मशान और कब्रिस्तान इसीलिए बस्ती से काफी दूर होते हैं। बहुत कम लोगों को इस बात का ज्ञान है कि मृत्यु जीवन का पर्यायवाची है। यदि हर श्वास जो खींचा जाता है जीवन की निरंतरता का प्रतीक है, तो हर श्वास जो हम छोड़ते हैं वह मृत्यु की प्रक्रिया का प्रतीक है। जितना अधिक तुम्हें इस बात का आभास होगा उतना ही अधिक तुम्हारे लिए इसके भय को अपने मन से निष्कासित करने का अवसर प्राप्त होगा।”

उन चमत्कारी-केरीवालों—जिनकी दीक्षा उतनी ही अग्राह्य है जितना कि उनका प्रसाद,

से रजनीश जी एक भिन्न प्रकार के आचार्य हैं।
आचार्य रजनीश जी से मुझे और मिलना चाहिए।
वे एक ऐसी भाषा बोलते हैं जोकि मैं समझ सकता
हूँ। और उनका भाषण जितना स्पष्ट है उतना
ही सम्मोहक है।

वज्रेश्वरी के गुरु मुक्तानन्द

बम्बई से यह बस पच्चास मील दूर है,
लेकिन वहाँ की कोलाहलपूर्ण भीड़ और दुर्गन्ध से
हजारों मील दूर है। एक पहाड़ के शिखर से
मैंने पूरे दृश्य को देखा। धान के छोटे-छोटे
पौधों के पीले आयत-आकार के खेत बिना दाढ़ी
बनाए हुए ठुड़ी के समान लग रहे थे। पहाड़ियों की
एक माला जिनके नाम मन्दिरों की घण्टियों के
समान बजते हैं, उत्तर में मन्दागिरी की ऊँची चोटी,
जहाँ से सूर्य सड़ता है वहाँ माँवलयी, और जहाँ वह
डूबता है वहाँ तुंगरेन्नर। और चोड़ी बाढ़ी के बीच
में चाँदी के धागे के समान, बहती नदी तेजसा।
सागवान के बड़े पत्ते गिर गए हैं, पीपल ने अपने
नये गुलाबी बेल-बूटे पहन लिए हैं, सेमल कलियाँ
फूटने के लिए तैयार हैं, उसकी लफटे पूरी तरह
से खिल उठी हैं। अपनी शारीरिक शक्ति को पुनः-
चार्ज करने का यह अच्छा स्थान है जैसा कि
आप को कहीं भी मिल सकता है। वैसे मेरी यह
यात्रा इसलिए हो रही थी कि मेरी आध्यात्मिक
शक्ति में क्या कोई चिनगारी शेष रह गई है। मैं

बाबा मुक्तानन्द से मिलने गया था।

अनेक मित्रों ने विरोध किया। "आप के पूर्ववर्तियों से हमें काफी भगवान और स्वामी मिले हैं। यदि आप बुढ़ापे में धार्मिक हो गए हैं, तो आप को इसकी नोट अपने पाठको पर नहीं करनी चाहिए।" नहीं, मैं धार्मिक नहीं बन रहा हूँ। लेकिन मैं ऐसे लोगों से दूर नहीं रह सकता। वे दूसरे लोक के वासी हैं। मैं उनके बारे में जानना चाहता हूँ। मैं जिज्ञासु हूँ, और जिज्ञासा मेरा पेशा है।

मैं पिछले पक्ष बाल योगेश्वर से मिला। मैंने उनसे सीमाशुल्क-विभाग से हुए, उनके भ्रष्ट के विषय में कुछ नहीं पूछा। मैं एक घण्टा माँ योगशक्ति सरस्वती के साथ रहा। मैंने कृष्णा कॉन्शेस लोगों के साथ अनेक शामें बिताई हैं। लेकिन मैं कभी भी आश्रम में न रहा। और मुक्तानन्द जी के वज्रेश्वरी के आश्रम के बारे में मुझसे काफी कुछ कहा गया था।

आश्रम अनेक प्रकार के होते हैं। गांधी जी का अपना टॉलसराय फार्म है और साबरमती वाला आश्रम था जहाँ भक्त लोग सरल किन्तु कठोर जीवन बिताते थे, स्वयं अपना भोजन उगाते थे और स्वयं अपने कपड़े कातते थे। वहाँ प्रार्थना से अधिक बल श्रम पर था। जयप्रकाश नारायणका भी अपना आश्रम है— जहाँ केवल श्रम है और प्रार्थना बिल्कुल नहीं।

गुरुदेव मुक्तानन्द जी के आश्रम में, दूसरा

ही क्रम चलता है: मनन और प्रार्थना पर अधिक समय व्यतीत किया जाता है, श्रम पर कम। यह एक धनाढ्य स्थापना है। संगमरमर और चाँदी का पुनुर आड़म्बर; बहुमूल्य कालीन और साज-सामान; आधुनिक बंगला, फल तथा तरकारी का बगीचा, फलोद्यान में पपीता, केला, चीकू और आम उगते हैं। मैत्री भाव वाले इस काले हाथी का नाम, स्वामी विजयानन्द है, जो चारे पर से अपनी सूँड़ हटाता है लेकिन जिसे सेब और आयात किए हुए चाकलेट अच्छे लगते हैं।

अन्य जिन गुरुओं से मैं मिला हूँ मुक्तानन्द जी उनसे भिन्न हैं। दीवारों पर जहाँ टीक-लकड़ी लगी हुई है, ऐसे वातानुकूलित स्वागत-कक्ष में जब वे घुसे जहाँ कि मैं उनकी प्रतीक्षा कर रहा था, मुझे इस बात को समझने में कुछ क्षण लगे कि मैं एक ऐसे व्यक्ति के समकक्ष हूँ जिस को हजारों लोग भगवान के अवतार के रूप में पूजते हैं। यद्यपि उनकी लूंगी और कमीज़ सन्यासी केसर रंग की थी, उनकी ऊनी टोपी जिसके ऊपर फुनगी थी और उनके काले चश्मे से वे एक विचित्र आकार के व्यक्ति लग रहे थे। यद्यपि वे एक सोफे पर बैठे थे जिसमें जड़ी वाले गद्दे लगे थे, फिर भी मित्रता और नम्रता का एक ऐसा भाव उनके चेहरे पर था जिसका आभास मुझे पहले नहीं हुआ था।

मैंने कहा, "मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ।" उन्होंने उत्तर दिया, "अवश्य! जितना मुझसे होसके मैं उनका उत्तर दूँगा। परन्तु पहले आप आश्रम

... १३३ ...
... १३४ ...
... १३५ ...
... १३६ ...
... १३७ ...
... १३८ ...
... १३९ ...
... १४० ...
... १४१ ...
... १४२ ...
... १४३ ...
... १४४ ...
... १४५ ...
... १४६ ...
... १४७ ...
... १४८ ...
... १४९ ...
... १५० ...

... १५१ ...
... १५२ ...
... १५३ ...
... १५४ ...
... १५५ ...
... १५६ ...
... १५७ ...
... १५८ ...
... १५९ ...
... १६० ...
... १६१ ...
... १६२ ...
... १६३ ...
... १६४ ...
... १६५ ...
... १६६ ...
... १६७ ...
... १६८ ...
... १६९ ...
... १७० ...
... १७१ ...
... १७२ ...
... १७३ ...
... १७४ ...
... १७५ ...
... १७६ ...
... १७७ ...
... १७८ ...
... १७९ ...
... १८० ...
... १८१ ...
... १८२ ...
... १८३ ...
... १८४ ...
... १८५ ...
... १८६ ...
... १८७ ...
... १८८ ...
... १८९ ...
... १९० ...
... १९१ ...
... १९२ ...
... १९३ ...
... १९४ ...
... १९५ ...
... १९६ ...
... १९७ ...
... १९८ ...
... १९९ ...
... २०० ...

क्यों नहीं देखेंगे? तब आप लौटकर आये और मुझसे याँ किसी और से जो पूछना चाहें पूछ लीजिए।”

मुझे शयनशाला, भोजन-कक्ष और पुस्तकालय दिखाए गए। सभी कमरे साफ-सुथरे थे। मैं गलियारे-जैसे मनन कक्षों में गया और वहाँ मैंने कई स्त्री-पुरुषों को पद्मासन में कमर-सीधे किए हुए, इस लोक से परे मनन में डूबे देखे।

दोपहर के बाद मुक्तानन्द जी मनन कक्ष में आए। उन्होंने अपने विदेशी शिष्यों को बुलाया। चार अमरीकी और फ्रांसीसी लड़की हमारे पास आकर बैठ गई। मुक्तानन्द जी मंगलौर के हैं। वे हिन्दी और मराठी बोल सकते हैं अंग्रेजी नहीं।

मैंने हिन्दी में उनसे पूछा, “लोग आपके पास क्यों आते हैं?” उन्होंने संक्षेप में कहा: “कई कारण हैं। कुछ लोग अप्रसन्न हैं, कुछ अशान्त और कुछ जिज्ञासु हैं।

“वे आपसे क्या पाते हैं?”

“उन्हें मन की शान्ति प्राप्त होती है। मनन क्रिया से, वे अपने आप को पहचानते हैं और ईश्वर को जो सब में विद्यमान है।”

मैंने धैर्य नहीं खोया। “क्या मन की शान्ति ही अन्तिम लक्ष्य है? मुझे यह स्वार्थपूर्ण और आत्मकेन्द्रित लक्ष्य दिखाई देता है। व्यक्ति को दूसरों को अपने से अधिक कुछ देना चाहिए।”

मुक्तानन्द जी ने उत्तर दिया, “वे ऐसा भी करते हैं; यह तब ही होता है जब एक पुरुष

अपने आप में भगवान को देरवता है और वह एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व बनता है और तब वह अपने भीतर का प्रेम दूसरों को दे सकता है।”

उनके शिष्यों ने बोलना शुरू किया। उमा, दमयन्ती और चन्द्र — हिन्दुओं नाम वाले सभी अमरीकी। सभी नवजवान आकर्षक और बालू थीं। उन्होंने क्रम से कहा, “हम भटके नहीं हैं। हम भले परिवारों से हैं।” लेकिन अनजाने में उन्होंने यह बता दिया कि वे अपसन्नता के विरुद्ध दवाईयाँ और नशीले पदार्थों का सेवन करते थे।

मैंने उसे पूछा, “और अब?”

“मैं कभी भी इतनी सुखी नहीं थी, मुझे आत्म शान्ति प्राप्त हुई है।” एक ने कहा जिसकी आखों में प्रसन्नता की चमक थी। कदाचित्, उसका नाम दमयन्ती था।

“शान्ति कभी भी कुछ लाभप्रद वस्तु उत्पन्न नहीं करती है: मस्तिष्क की निरन्तर अशान्ति ही कला, संगीत, वैज्ञान जैसे महान कार्यों को उत्पन्न करती हैं। यह बिजली यंत्र — पंखे, वातानुकूलित, बिजलियाँ — सभी अशांत मनो की उपज हैं। उनकी उनकी वेदनाओं से विश्व समृद्ध हुआ है।”

“हम उनके बिना भी खुश रह सकते हैं।”

“यह कोई उत्तर नहीं है; वैज्ञानिक अविष्कारों, चित्रकारी, और संगीत के बिना यह विश्व कैसा होता?”

“जितना कुछ भी हममें अच्छा है हम दे सकते हैं। हम सभी माईकलअनजलो और

बीचोबिच नहीं हो सकते।”

“लेकिन यह मनन-क्रिया जिसपर आप का बहुत अधिक विश्वास है मुझे एक स्वार्थपूर्ण आसक्ति और व्यर्थ समय गवाने की क्रिया लगती है। मैं तो एक अच्छी किताब पढ़ना प्रसन्द करूंगा। मैं तो आँख बन्द करके जागने के स्थान पर सोना प्रसन्द करूंगा।”

सब लोग हँस पड़े। मुक्तानन्द जी ने पूछा कि क्या कहा गया। उनके निकटतम शिष्यों में से, एक श्री यन्दे, ने उनको इस बहस का संक्षिप्त विवरण दे दिया। उन्होंने समर्थन में अपना सिर हिलाया और मुझसे बात जारी रखने को कहा।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस व्यक्ति में यह शक्ति है कि ये प्रत्येक व्यक्ति को आश्चर्य करते हैं: और उसे यह अनुभूति देते हैं कि वह आदमी अत्यन्त विशिष्ट है। और वे पूर्णरूपेण अहंकार रहित हैं। मुझे किसी साधु-सन्यासी के निकट इतने छोड़े समय में आजाने की अनुभूति इसे पूर्व नहीं आई। हमने तब तक अपनी बहस जारी रखी जब तक कि हम मनन और श्रम के बीच विरोध की समस्या तक न पहुँचे।

“आप क्यों नहीं कोशिश करते हैं?” उमा, जो उनकी समाचार-पत्रिका का सम्पादन करती हैं ने कहा। “यह समझना बड़ा कठिन है—उतना ही कठिन जितना कि उस आदमी को चाकलेट का मज़ा समझना जिसने चाकलेट कभी खाया न हो।” बैठक समाप्त हो गई। प्रोफेसर जैन ने बहस

आरम्भ की। उन्होंने मुझे मेरी वास्तविकता समझाई "हर कोई अपना कार्य उतनी अच्छाई से करता है जितना उसे हो सके। आप वीकली के सम्पादक हैं; और हमारी समाचार-पत्रिका, उमा सम्पादित करती है।" मैंने अपनी भूल स्वीकार की। एक मुस्कराहट से उन्होंने मुझे क्षमा कर दिया और कहना जारी रखा। "अपने नाटक और कविताएँ लिखने में शेक्सपियर को बहुत वर्ष लगे थे; हमारे गुरुदेव ने सत्तराह दिनों में 'चित्त-शक्ति विलास' लिखा। चेतना का नाटक जो कुछ भी शेक्सपियर ने लिखा उनकी अपेक्षा में यह बहुत महान है। यह मन की किसी अशांति से उत्पन्न हुई रचना नहीं है अपितु, गहरी शांति से उत्पन्न है।"

लड़कियों ने मुझे आश्वासन दिया कि वह अपने उत्तरदायित्व से भाग नहीं रहे हैं। यद्यपि आश्रम का जीवन उन्हें अपार शांति प्रदान करता है, तथापि यह जीवन इतना सरल नहीं। प्रातः ३:३० बजे जागना, जाकर और अनेक कार्य, प्रार्थना एवं मनन करना एक कठोर अनुशासन है।

मैंने ज़रा उत्तेजित होकर पूछा, "किस उद्देश्य के लिए? मैं भगवान पर विश्वास नहीं करता और मुझे उनकी आवश्यकता नहीं है, इसलिए मैं अपने भीतर उससे टूटने का क्या प्रयत्न करों?"

लड़कियों ने एक साथ मिलकर कहा; "जितना आप स्वीकारना चाहते हैं उसे कहीं अधिक आत्मविश्वास आप में है।" और सबने एक साथ मिलकर मुझे फिर से चुनौती दी: "आधर और आश्रम में कुछ दिन बिताकर आप स्वयं इस सब का अनुभव कीजिए।"

“आप जैसी आकर्षक लड़कियाँ तो मुझे विनमित कर देगी।”

वह सब प्रसन्नता से हँस पड़े।

मैंने मुक्तानन्द जी से विदा ली। उनके और उनके शिष्यों से असम्य प्रश्न पूछने के लिए मैंने माफी माँगी। उन्होंने अपना हाथ मेरे कंधे पर रखा और वे मुस्कुराए। “वे असम्य प्रश्न नहीं थे; वे बहुत ईमानदार प्रश्न थे। फिर आएगा।”

मैं दुबारा वज्रेश्वरी जाऊँगा। अपनी आध्यात्मिक शक्ति को पुनर्जीवित करने के लिए लोगों को वहाँ जाना चाहिए; मैं वहाँ फूलों की चमक देखने के लिए, पहाड़ों का स्वच्छ वायु पीने के लिए जाऊँगा और गुरुदेव मुक्तानन्द जी से दुबारा यह आश्वासन प्राप्त करूँगा कि मैं जितना अपने को दुर्जन समझता हूँ उतना नहीं हूँ।

भगवान श्री नीलकण्ठ टाठा जी

सत्य साईं बाबा की समरूपता प्रभावशाली है; सिर पर वैसे ही धुँधले केशों का गुच्छ, वैसे ही चमकीली आँखें जो आप पर प्रभाव डालती हैं, और वैसे ही सौम्य मुस्कान, कंधों से पाँव तक वैसे ही शरीर के सभी अंगों से आच्छादित हैं। वे वैसे ही ‘चमत्कार’ सम्पन्न करते हैं — अपने हाथों को वायु में लहराकर विभूति उत्पन्न करते हैं — उनके अनुयायी कहते हैं कि वे अस्वस्थ को स्वस्थ कर सकते हैं — एक व्यक्ति ने यह दावा किया कि दिल

की दड़कन बन्द होने के पश्चात् भी उसको जीवित किया गया। नमस्कार करने वाला ३६ वर्षीय ये पुरुष भगवान श्री नीलकंठ टाठा जी हैं जिसे उनके अनुयायी "मालिक, मार्गदर्शक, गुरु और भगवान की प्रतिमूर्ति" मानते हैं।

हमारे शहर बम्बई में उनके आगमन की सूचना मैंने समानार पत्रों के विज्ञापनों से प्राप्त की। उच्च-वर्ग के लोगों की एक बस्ती में एक फ्लैट में उनके दर्शन के लिए इच्छुक लोगों को आमंत्रित किया गया।

मुझे वहाँ एक पारसी दम्पति ले गए, जो नीलकंठ बाबा के भक्त थे।

बड़ा हाल उपासकों से भरा पड़ा था जो कि भजन गा रहे थे; यह सभी अच्छे वस्त्र पहने उच्च-मध्य वर्गी लोग थे। मंच पर एक खाली कुर्सी रेशम से सजी हुई थी। इसी के पास और एक कुर्सी थी जिसपर बाबा का एक बहुत बड़ा रंगीन चित्र था, इसके चौरवटे के इर्द-गिर्द एक हार था और दर्जनों जलती अगर-बत्तियाँ से ढेर सारी सुगन्ध उठ रही थी।

बाबा ने अपना दर्शन दिया। हर किसी ने उनको प्रणाम किया; बहुत से लोगों ने उनके पैर छुए। वे मंच पर बैठे और ॐ नमः शिवाय, ॐ नमो नारायणः के भजन गीत में सभी लोग सम्मिलित हुए। लक्ष्मी, गणपति और देवकुल के शेष सभी भगवानों को नमस्कार किया गया— सर्व धर्मीय नमस्कारः। दीयों से भरी हुई खाली

हिला-हिलाकर, उन्होंने आरती की। गाने की ताल तथा हाथों की करतलद्वनि अपनी चरम सीमा पर पहुँची और सहसा ही रुक गई। नीलकंठ जी अपने कमरे में वापिस चले गए।

हममें से दूः को उन्होंने अपने शयनकक्ष में आने के लिए आमंत्रित किया। हम उनके चैरों के निकट कर्सी पर बैठे। उन्होंने हमसे बात की। उनकी हिन्दी बहुत अच्छी नहीं थी और प्रायः वे अपने शिष्यों से तिलगू अथवा शब्द-समुह के हिन्दी पर्यायवाची पूछते थे। उन्होंने कहा कि वे पाँच भाईयों में से एक हैं — और वे एक निर्धन किसान के बेटे हैं। सम्पत्ति का जब बटवारा हुआ, तो उन्हें कुल मिलाके कुछ मन ज्वार ही प्राप्त हुआ। उन्होंने अपने भाईयों से यह अनुरोध किया कि उनके बीमार पिता पैतृक सम्पत्ति के रूप में उनको दिये जाए।

उनमें यह 'शक्ति' कब उत्पन्न हुई? वे तो नहीं जानते कि कब और किस समय ऐसा हुआ लेकिन अन्य लोगों ने देखा है कि उनके साथ एक विचित्र परिवर्तन हो रहा है। जब उन्होंने बुरवार से पीड़ित हुए एक ठ्यल्लि के माघे पर हाथ रख दिया, तो उसका बुरवार दूर हुआ। जब उन्होंने किसी की सड़ी हुई टांग को छुआ जिसे अस्पताल में कटवाने के लिए ले जा रहे थे, तो उसकी टांग की सड़न दूर हो गई। एक शिष्य जो कि मेरे पीछे बैठा था उसने फुसफुसाते हुए मुझसे कहा, "मेरे दिल की धड़कन बन्द हो गई।"

थी; मैं मर गया था। बाबा ने मुझे दूसरा जीवन प्रदान किया। आप देखते नहीं वे कितने दिव्य लग रहे हैं? उनके सिर की चारों ओर आभा देखिए?" क्या मैंने बाबा के सिर के चारों ओर कोई प्रभास देखा?

उन्होंने मुझे अपने निकट आने को कहा। मैं आगे बढ़ा। उन्होंने हथेली पर अपना अंगूठा रगड़ा और मेरे हाथ में चोड़ा सा भस्म डाला। दुबारा फिर उन्होंने यही चेष्टा की — उनके हाथ में एक रुधिराक्ष प्रकट हुआ। उन्होंने मुझे 'इसको अपने गले में पहनने' को कहा। उन्होंने मेरी कमिज पर एक बैज लगाया। जिस पर उनका चित्र था, कार में लगाने के लिए एक और चित्र दिया और अपनी चित्रवाली एक अंगूठी मेरी उंगली में पहना दी। मेरे मित्रों ने फलों का एक टोकरी उनके लिए लाया था। उन्होंने इनको हर एक में बाँटने का आदेश दिया। महिला ने विरोध प्रकट किया, "परन्तु यह तो आपके लिए है।" उन्होंने उत्तर दिया: "जो कुछ भी मैं दूँगा वह प्रसाद बन जाता है।" और उसकी टोकरी से उन्होंने उस महिला को एक सेब और एक केला दिया। अन्धप्रदेश के करनूल जिले में, अपने आश्रम ओमनगर में, आने का आमंत्रण दिया, जहाँ अगले दिसंबर में उनकी बेटी की शादी थी, उन्होंने हमें आशीर्वाद दिया और जाने की आज्ञा दी। श्री गीलकंठ टाठजी एक सरल स्वभावी, निरभिमानी व्यक्ति हैं जिनमें लोगों को अपनी ओर

आकर्षित करने की चुम्बकीय शक्ति हैं। वे अपने अनुयायियों के लिए सुख-सन्तोष के स्रोत हैं, और वे लोग जो अतिपाकृत में विश्वास रखते हैं वे इनमें एक ओर समतकार पूर्ण व्यक्ति पायेंगे।

मोमबत्ती रोशनी से दत्तावल

बिजली अचानक बुझ गई। मैंने अपने पड़ोसियों से पूछा। नहीं, उनकी बिजली ठीक थी। मैं वापिस आया और अनेक स्विचों को जलाकर यह आशा करता रहा उन्हीं में से किसी के कारण मेरी यहाँ की बिजली चली गई होगी। बिलक-कुलाक, बिलक-कुलाक — बिजली नहीं आई।

सम्भवतः फ्यूज जल गया होगा। और मुझे तारों के जोड़, शॉटसर्कट, फ्यूज ठीक करना इत्यादि कुछ भी नहीं आता। मैं फोन करके ठीक तो कर सकता हूँ, लेकिन उसमें भी कई घण्टे लगेंगे। अतः मैं एक छोटी सी प्रार्थना करता हूँ। बिजली के देवता एक अज्ञेयवादी की प्रार्थना सुनने से इंकार करते हैं। मैंने मोमबत्तियों का एक डिब्बा निकाला जिन्हें मैंने भारत-पाक युद्ध के दिनों में खरीदा था और एक-एक करके यथास्थान लगा दिया।

दरवाजा किसी ने खड़खड़ाया (चंदी ने भी मौन रहने की कसम खाई थी)। शायद भगवान को दया आई हो और किसी को मेरे घर के अन्दर को भगाने के लिए भेजा हो। मैंने दरवाजा

खोला — अरे वाह — एक सन्यासी। काले केश और दाढ़ी के प्रभामण्डल के बीच दन्ताबल का पीला चेहरा चाँद के समान लग रहा था। उनका सखि और मेरा एक मित्र उनके पीछे-पीछे हैं।

कम रोशनी और बिना पंखे के कमरे में हो रही उमस के लिए मैंने उनसे क्षमायाचना की। मेरा हाथ अपने हाथों में लेते हुए उन्होंने उत्तर दिया, "सिन्ता की कोई बात नहीं है, वास्तव में, बिजली के बलब की अपेक्षा मैं मोमबत्ती की रोशनी पसन्द करता हूँ।" मेरे मन में एक गहरा सन्देह उत्पन्न हुआ: मेरे फ्लैट में बिजली बन्द करने की कहीं उन्होंने इच्छा तो नहीं की है?

वे एक ई वर्षा युवक हैं। पीली-त्वचा, किन्तु गठीला शरीर तथा अपनी भेदने वाली आखों और नाटकीय ढंग से बोलने के माध्यम से, शक्ति बिखेरता हुआ। लीड्स विश्वविद्यालय से पढ़े एक अवकाश प्राप्त न्यायाधीश के वे पुत्र हैं। वे सोफे पर बैठ जाते हैं, और कुरते को ठीक करते हुए कहते हैं, "आप मुझसे कुछ पूछना चाहते थे?"

"हाँ, पूछना तो चाहता था, लेकिन एक ही प्रकार के उत्तर सुनकर मैं चक चुका हूँ। मैं आप के बारे में जानना चाहूँगा। आप क्या कहते हैं इसे, इस मार्ग पर क्योंकि....."

"आध्यात्मिकता," उन्होंने टोकते हुए मुझे उचित शब्द प्रदान किया। "जब मैं केवल तीन वर्ष का था, तो तब मेरा पहला अनुभव हुआ था। अपने भीतर मुझे एक विभिन्न प्रकार का विस्तार सा

अनुभूत हुआ। समझ गए?"

"नहीं, मैं नहीं समझा, किसी प्रकार का विस्तार?"

"विस्तार! विराट का," उन्होंने समझाया, अपने हाथों को इस तरह से फैलते हुए जिस तरह से छाती फुलाने वाले करते हैं। "अब समझ गए?"

"नहीं, फिर भी, आप आगे चलिए। बताएं आगे क्या हुआ।"

"मुझे यह लगा कि मेरे पास पूर्व-सूचना बोध है; मैं आने वाली घटनाओं को पहले से जान सकता हूँ। आप पूर्व-सूचना को समझते हैं ना?"

मैंने अपने सिर को हिलाया। "समझ गए?" और "समझ में आया?" यह एक प्रकार के तर्किया-कलाम है। दत्ताबल की बातचीत में इनका प्रायः प्रयोग होता है।

मैंने उनसे पूछा, "एक उदाहरण दीजिए।"

"अच्छा।" जब मैं कालेज में पढ़ता था, मैंने सपने में एक साँप को बोतल में देखा। जो लग रहा था कि मुझसे छुड़वाने की भीख माँग रहा हो। दूसरे दिन जब मैं प्रयोगशाला में पहुँचा, मैंने वही साँप एक जॉर में देखा। प्रयोगों के लिए एक व्यक्ति ने इसे विज्ञान के प्राध्यापक के पास लाया था। मैंने उस व्यक्ति से साँप को छोड़ देने के लिए कहा, वह ऐसा करने को तैयार न था; हमारी मराठी में एक चेतावनी है कि जख्मी साँप को कभी जिन्दा भागने नहीं दिया जाना चाहिए। फिर भी मैंने उसे मनाया और साँप को छोड़ दिया गया। क्या समझें आप इसे?"

"यह तो विशुद्ध संयोग है। सपना घटना के बाद आया हो सकता है और बाद में उसे भूल से इधर-उधर कर

दिया गया।”

मेरे अविश्वास पर दत्ताबल कुछ अप्सन्न दिखाई दिए। “वैज्ञानिक ढंग से पूर्वसूचना को प्रमाणित किया जाता है। भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों निरन्तर चलते हैं। यदि आप भूतकाल जान सकते हो, तो आप भविष्य काल भी जान सकते हो।” उन्होंने ऐनस्टायन की समय और स्थान सिद्धान्त का उद्धरण दिया। उन्होंने गुरुदीक और आउस्पेनस्की के भी उद्धरण दिये। “समझे आप?”

“नहीं, मुझे आप का यह तरीका पसन्द नहीं आया। ऐनस्टायन से आउस्पेनस्की तक छलांगे लगाना — वैज्ञानिक ढंग से प्रमाणित किए गए तथ्यों को अप्रमाणित रहस्यात्मक घटनाओं के लिए सादृश्य के रूप में प्रयोग करना मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगा।

“आउस्पेनस्की से गुरुदीक अधिक प्रभावशाली है। फिर भी पूर्वसूचना भलिभाँति नोसत्रदागस की भविष्य-वाणियों से प्रमाणित हुए है।”

दत्ताबल के सचिव डीसाई ने कहा, “और हमारे भृगुसंहिता ने भी यह प्रमाणित किया है।”

मेरा रक्त-चाप बढ़ गया। “मैं तो कहता हूँ, कि नोसत्रदागस और भृगु संहिता दोनों भूर्खतापूर्ण कूड़ा पुस्तके हैं। और यदि इसको आप वैज्ञानिक कहते हो, तो क्षमा करे मेरे लिए यह सब असह्य है।”

दत्ताबल ने विषय बदल दिया। “क्या आप टेलिकायनसिज में विश्वास रखते हो?” वे मेरी प्रतिक्रिया देख रहे थे कि मुझे इस शब्द के अर्थ मालूम है। तब उन्होंने मुझे समझाया। “मैं वस्तुओं को कुछ दूरी मात्र अपनी संकल्प शक्ति से हिला सकता हूँ।”

कहा जाता है, "सम्मोहन-करता लोगों की चेष्टाओं को वश में करने की शक्ति रखते हैं।

"न केवल लोग अपितु, निर्जीवि वस्तुओं को भी। यदि आप कोलापुर आए तो मैं यह आप के लिए इसका प्रदर्शन करूँगा।"

"कोलापुर क्यों? यहाँ क्यों नहीं?"

दत्तात्रय ने समझाया कि इन प्रयोगों के लिए बहुत सारी तैयारी आवश्यक होती है। लेकिन वे अपनी स्वस्थ स्वस्थ करने की शक्ति, तथा वैज्ञानिक निरीक्षण में अपने दिल को पूरे तीन मिनट तक बन्द करने की कलाका प्रदर्शन करने को तैयार है। उनके साथ बातचीत करने में बड़ा मजा आ रहा है। वे काफी पढ़े लिखे हैं और मुझे कूलिन विलसन के पुस्तक द आऊट सायडर की याद दिलाते हैं। वे विज्ञान, आध्यात्म और दर्शन, तीनों के विद्वान हैं।

वे सुनिश्चित रूप से कहते हैं, "मैं एक साधु, सन्यासी याँ स्वामी नहीं हूँ। याद रखो, दुर्गम से एक बनना मेरे लिए कठिन बात नहीं है। किसी समय, मेरी बातें सुनने के लिए लाखों लोग आते हैं। मैं सन्यासी होने का व्यापार नहीं करना चाहता। मैं चाहता हूँ कि मुझे एक आध्यात्मिक, दार्शनिक समझ आए। मैं प्रेम की शक्ति का उपदेश देता हूँ। मैं खाने और पीने के लिए कोई नियम नहीं बनाना चाहता हूँ।"

"परन्तु, आप ब्रह्मचारी हैं। स्पष्ट रूप से आप काम-वासना के त्याग में विश्वास करते हैं।"

"हाँ, मैं विश्वास रखता हूँ। परन्तु इस विषय में मैं आप से किसी ओर समय बात करूँगा।"

मुझे आशा है, कि आगे चलकर 'दत्ताबल से संवादों' का एक नया धारावाहिक शुरू होगा। और, जैसे कि प्रत्येक धारावाहिक, इस तरह से समाप्त होता है कि व्यक्ति एक नये धारावाहिक की प्रतीक्षा में रहता है—काम वासना या बहानरी?

बदलो आत्मा को स्वर्ण से

फुलौरा फोटेन का दृश्य है, जो कि बम्बई शहर का सबसे व्यस्त चौराहा है। तापमान करीब चालीस डिग्री था। दोपहर के २ बजकर ३० मिनट थे। अपने वातानुकूलित कार्यालयों में साहब लोग सुस्ता रहे हैं। केवल पागल कुत्ते और मुफ्त जैसे लोग ही बाहर भारत की यह गर्म एवं उमस भरी हवा पी रहे हैं। अमरीकन ऐक्सप्रेस के कार्यालय के बाहर युवक अमरीकियों के एक गुट को एक भारी भीड़ घूर-घूर कर देख रही है। गुच्छेदार चोटी, को छोड़ सिर एक दम मुंडे हुए, माथे पर पिसा चंदन पुता हुआ, और केसरी वस्त्र पहने हुए थे। वे भाँफ, डोल और लीन होकर हाथ उठा-उठाके हरे कृष्णा-हरे कृष्णा गा रहे थे।

उनके मस्तक सूर्य में चमक रहे थे। उनके गर्दन से पसीना बह रहा था। वे तो ऐसे लोग लग रहे थे जैसे कोई पवित्र आत्मा उनके सिर चढ़कर बोल रही थी। लोगों की भीड़ इन्को पसन्द करती है। "अप्प देखिए, हम हिन्दोस्तानियों ने जो कुछ खोया, पश्चिम ने वही पाया।" मेरे निकट खड़े एक आदमी ने मुझसे कहा। केशरी साड़ी में एक अमरीकी महिला कन्नों की

चुमाने वाली गाड़ी में अपने दू: महीने के बच्चे तथा दूरी पुस्तकाओं के ढेर को लादकर, हमारे बीच बूम फिर रही है। एक रंगीन पुस्तिका हिलाते हुए वह कह रही है, "एक रुपए में, एक रुपए में।" हमने जल्दी से एक रुपया निकाला और उसके बदले में वह पुस्तिका खरीदी। गीत गाने की गति उन्मत्त पराकाष्ठा पर पहुँची।

अमरीकी ऐक्सप्रेस कार्यालय की एक खिड़की खुली और एक क्रुद्ध अमरीकी जोर-जोर से चिल्लाने लगा, "भागो यहाँ से! हम काम कर रहे हैं। काम सम्पन्न हो ना?" एक अमरीकी दूसरे अमरीकी पर चिल्लाया। फाँफ और डोल भजाते हुए हम हरे-कृष्ण गाते हुए वहाँ से आगे चले।

दो दिन बाद मैं अपने वातानुकूलित दफ्तर में बैठा हूँ।" पेट में ढेर सारा लंच भरा है; और मस्तिष्क में ढेर सारी नींद; काम करने को बिल्कुल मन नहीं हो रहा है। चपरासी एक कागज की परची लेकर अन्दर आया। एक मिलने वाला मुझसे मिलने का आग्रह कर रहा था। मैंने कलम उठाकर लिखना चाहा, "नहीं, पूर्व-नियुक्ति के बिना आप नहीं मिल सकते।" मैं रुक गया। कागज की परची पर लिखा था, "हरे कृष्ण। अपनी चिरन्तन भलाई के लिए मेरी ऊँ प्रार्थना स्वीकार कीजिए। मैं आपसे कुछ क्षणों के लिए मिलना चाहता हूँ।" नीचे हस्ताक्षर थे, "पद्मपादोंका सेवक, श्याम सुन्दर दास (यू. एस. ऐ.)।" इससे कैसे जना कर सकूँ? मैं अपने मिलने वाले को अन्दर ले आने के स्वागत के लिए बाहर चला जाता हूँ। मिलने वाला उन युवक अमरीकी कृष्ण भक्तों में

से एक है जिन्हें मैंने फुलौरा फोंटेन पर देखा था। वही केसरी कपड़े; वही व्यक्तित्व में पारलौकिक आत्मा। भारतीय दंग से मुझे हाथ जोड़ कर कहते हैं, "हरे कृष्ण।" अमरीकी दंग में मैंने उत्तर दिया, "हाँ।" उन्होंने अन्तराष्ट्रीय कृष्ण कान्ग्रेसनेस सोसाइटी के आने वाले सम्मेलन के बारे में कहा। कुछ अमरीकी भक्त यहाँ भजनों में भाग लेने के लिए आ रहे हैं।

मैंने उससे पूछा, कि ऐसा क्यों है, कि हमारे सभी आध्यात्मिक नेता — राधास्वामी गुरु, बाबा महेशयोगी, आनन्दमाई माँ और अन्य — अपने भारतीय अनुयायों के सामने अमरीकी शिष्यों का प्रदर्शन चाहते हैं?

उसे यह मेरी बात अच्छी नहीं लगी कि मैंने अन्य धार्मिक गुटों को उनके धार्मिक गुट के साथ मिला दिया और उसने मुझे अमरीका में कृष्ण कान्ग्रेसनेस के फैलाव के बारे में बताया। मैंने उसे कहा कि ऐसा ही मैंने कई और लोगों से सुना है लेकिन जब भी मैं कभी उनके देश में होता हूँ तो मुझे इसके प्रमाण एक-आध स्थान को छोड़कर और कहीं नहीं मिलता, लगता है कि समानार-पत्र इस तथ्य को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करते हैं।

उसे यह भी पसन्द नहीं आया। उसने मुझे आश्वासन दिया कि मैं जल्दी ही सच्चाई जान जाऊँगा। मैंने उसे और चिड़ाया, "आप ऐसा करो कि आप हमारे सब धर्म ले जावों और अपने डालर हमें दे दो; यह तो बढ़िया अदला-बदली होगी?"

वे एक महान-व्यक्ति की तरह मुस्कराकर मुझसे

कहता है। "मेरे मित्र, भौतिकवाद की सभी स्थितियों से हम गुजर चुके हैं, मैं तुम्हें बताता हूँ इस में कुछ नहीं रखा है।"

मैंने उसी ढंग से उत्तर देते हुए कहा! "मेरे मित्र, हम भारतीय हर प्रकार के आध्यात्मवाद से गुजर चुके हैं। मैं तुम्हें बताता हूँ, इनमें भी कुछ नहीं है।"

— — — — —

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

— — — — —

मद्य निषेध पर रोक लगाओ

शराब पीने के अधिकार की स्वतंत्रता के लिए मैंने कई बार एक-पुरुषी सत्याग्रह करने का विचार किया है। एक हाथ में बोतल, दूसरे हाथ में मद्यनिषेध पर रोक लगाओ ध्वजा लिए हुए, मैं शहर की प्रमुख सड़क से गुजरता यह नारा लगाकर चिल्लाता:

सोड़ा बर्फ बिस्की दो
नहीं तो गद्दी छोड़ दो।

तब मैं एक चौराहे के बीच वद्यासन लगाकर सारा यातायात रोक लेता, और औपचारिक रूप से कुछ 'पेग' तब तक पीता रहता, जब तक कि पुलिस हथकड़ी डालकर मुझे जेल न ले जाती।

मद्यनिषेध को समाप्त करके, महाराष्ट्र सरकार ने, पहला बाटलीवाला शहीद बनने की मेरी इच्छा को तोड़ दिया। मेरी प्रतिक्रियाएँ थोड़ी सी उलभ गई। मुझे एक पंजाबी कहावत याद आई गई: बकरी की घोड़ी लीद डालकर किसी व्यक्ति को दूध के गिलास में देने से बचा मतलब! सचिवालय में जिन लोगों ने यह नियम बनाया कि २१ वर्ष के ऊपर का ही व्यक्ति शराब खरीद सकता है वास्तव में ताड़ी या फिनी पीये हुए रहा होगा।

फिर भी, एक सिद्धान्त की सत्यता प्रकट हुई। किसी को भी यह कहने का अधिकार नहीं है कि कोई

क्या खाये याँ पिये, याँ न खाये याँ न पिये। मद्यनिषेधवादी वास्तव में एक हस्तक्षेपवादी व्यक्ति है, और एक रंग में भंग डालने वाला भंगारिया। "वह तो एक ऐसा व्यक्ति है जिसके साथ बैठकर पीने की इच्छा भी नहीं होगी — यदि वह पीता भी हो" — (मेन्केन)। मुझे खुशी है कि अब हमें कें ऐसे व्यक्तियों से उलझना नहीं है।

शराब को आसानी से उपलब्ध कराने के पश्चात् इस दिशा में दूसरा कदम उसे सस्ता बनाने का है। यदि मूल्य निषिधात्मक बने रहेंगे, तो मद्यनिषेध से उत्पन्न अनेक बुराईयाँ ओर बढ़ेंगी — जैसे अवैध आसबन, छिप-छिपकर शराब तथा जहरीले मद्यों को बेचना — आदि। ऐसा कोई भी कारण नहीं है कि बनाने वाले को बीयर की एक बोतल, जब ५० पैसे में बनती है, तो पीने वाले को यही बोतल रेस्तराँ में ५ रुपयाँ या उससे ज्यादा में क्यों मिलती है। यही बात शराब पर भी लागू होती है। आवश्यकता हमें इस बात की है कि हमें शराब ऐसी बढ़िया और स्वच्छ मिले, जिसे न तो ज़गर ही खराब हो — और नहीं हमारी जेबों पर असर पड़े।

बहुत निम्नस्तर की विस्की और बहुत अधिक कीमत की स्कॉच के कारण ही, हममें से बहुत सारे लोगों की आदत होगई है, कि हम राजदूतों के साथ निपकते हैं याँ उन अमीरों के साथ जो अपने काले धनसे ढेर सारी आयातित विस्की खरीद सकते हैं। लीह के अनुसार, "हमें किसी ओर के व्यय से मंदिरा पीकर हर्षोन्मत्त नहीं होना चाहिए" — अपितु अपने पैसों से खरीदी हुई शराब से।

हमारी मंदिरा-उद्योग के लिए एक अच्छा मविष्य
रखल रहा है। पिछले वर्षों में, बहुत सारे किसान खेती-
बाड़ी के बदले अंगूर की खेती में लग गए हैं। इनमें
से बहुत सारे बाजार पहुँचने से पहले ही सड़ जाते हैं।
हमें अपने किसानों को मद्य बनाना सिखाना चाहिए। यह
एक सरल प्रणाली है जिससे चौड़ा से खर्च पर किया जा
सकता है। और हमारे यहाँ तो खूब धूप होती है,
इसलिए हर साल हमारे लिए अंगूर की बढ़िया फसल होगी।

एक मद्यनिषेधविरोधी एक उपदेशक ने अपनी
सभा से कहा; "कि यदि आप गद्दे के सामने एक बाल्टी
पानी याँ और एक बाल्टी विस्की रखे, तो दोनों में से
वह क्या पियेगा।?"

सभा ने सम्मिलित होकर कहा, "पानी।"

मद्यनिषेधविरोधी उपदेशक ने उल्टित होकर
पूछा, "क्यों?"

"क्योंकि वह गद्दा है।"

इस किस्से का अर्थ तो यह है, कि एक पीने
वाले व्यक्ति को आप उसी तरह से मद्यत्यागी बना नहीं
सकते जिस तरह से आप मुरारजी डिसाई को विस्की पिला
नहीं सकते। अलइस हक्सले ने उचित रूप से यह कहा
है कि अपने धर्म, देश, प्रियजनो अथवा किसी अन्य वस्तु
की अपेक्षा शराब पीने के अधिकार को बनाए रखने
के लिए अधिक लोगों ने अपनी जाने गवाँई है।

पीने के बुरे प्रभावों को आप नाहे जितनी
देर और जहाँ तक कहते रहे; उस व्यक्ति के ऊपर
कोई प्रभाव नहीं पड़ता जिसे पीने में मज़ा आता है।
शराब के विरुद्ध मद्यनिषेधवादी के शब्दाडम्बर के अनुरूप

ही शराब पीने के मजे से सम्बन्धित मद्य प्रेमी की मुक्त प्रशंसा को प्रस्तुत किया जा सकता है। साल्वेशन आर्मी के इवनजलीन क्लब द्वारा शराब की सदान्वारी निन्दा देरिए :

मदिरा ने बहुत सारा रक्त नुस लिया हैं,
 बहुत कुछ उतरवाया हैं,
 बहुत सारे घर बिकवाए हैं,
 अनेक लोगों को दिवालिया बना दिया है,
 अनेक नौसों की सहायता की है;
 अनेक बच्चों को मरवाया हैं,
 शादी की अनेक अंगूठियों को तोड़ा हैं,
 अनेक निर्दोषों को बिगाड़ा हैं,
 अनेक आँखे अंधी हुई हैं,
 अनेक अंगों को तोड़ा-मरोड़ा हैं,
 अनेक तर्कों को नष्ट किया हैं,
 अधिक पुरुषत्व को बरबाद कर दिया हैं,
 अनेक नारीत्व को अपमानित किया हैं,
 अनेक सारे दिल को तोड़ा हैं,
 अनेक जीवनों को समाप्त किया हैं,
 अनेक आत्महत्याओं को जन्म दिया हैं और किसी
 ऐसी विषैली पदार्थ जिसने समस्त संसार
 में कभी कबरे खुदाई हो,
 से भी कई अधिक कबरे खुदाई हैं।

और इसकी तुलना अब करिए मद्य प्रेमी की इस मद्य प्रशंसा से:

यह आयु की गति को कम कर देता है, यह यौवन को शक्ति प्रदान करता है, पाचन-शक्ति को बढ़ाता है, यह अवसाद दूर करता है, यह हृदय को प्रसन्न करता है, यह मन को शान्त करता है, यह उत्साह की वृद्धि करता है; यह मस्तिष्क को चक्कर खाने से, आँखों को चकानाचोंध होने से, जीव को लड़खड़ाने से, मुँह को कड़ाई से बचाता है, दाँतों को किटकटाने से और गले को तीव्र होने से सुरक्षित रखता है; यह आमाश्व को मिचली का अनुभव करने से, दिल को सूजने से, हाथों को चरचराने से, नसों को सिकुड़ने से, रगों को भुरभुराने से, अङ्गियों को पीड़ित होने से, और मज्जा को तर-बतर कर देने से सुरक्षित रखता है। (हालीनस सिटीडस क्रोनिक्ल, १५६१)।

मध्यनिषेधवादी कहता है; "मध्यशाला एक बैंक है, जिसमें आप पैसे जमा करते हो और खो देते हो; अपना समय जमा रखते हो और खो देते हो; अपनी पुरुषोन्नित स्वतंत्रता रखते हो और खो देते हो; अपने चरित्र को रखते हो और खो देते हो; अपने घर के आराम को रखते हो और खो देते हो; आत्मनियंत्रण को रखते हो और खो देते हो; अपनी बच्चों की खुशी रखकर उन्हें खो देते हो; अपनी आत्मा को रखते हो और खो देते हो।"

मदिरा पीने वाले ने उत्तर दिया, यह सब तो बकवास है। अधिकांश सर्जनात्मक व्यक्ति, कलाकार, संगीतज्ञ, लेखक, आदि, चादक पेय से ही प्रेरित होकर महान रचनाओं को प्रस्तुत किया है। सेमियुल बटलर लिखते हैं, "निम्न अपराधियों की वृद्धि पर मानव बुद्धि की महानता अधिकांशतः शराब के कारण सिद्ध हुई है क्योंकि उसे कल्पना को पंख लग जाते हैं।" रेनेलियस

ने अत्यन्त स्पष्ट रूप से कहा: "कल्पना भ्रम का एक ओर नाम है। जब मैं पीता हूँ, मैं सोचता हूँ: और जब मैं सोचता हूँ, तब मैं पीता हूँ।" जे. एस. बेलकी ने संक्षेप में कहा: "देवताओं का वेद्य मदिरा है; कवियों का वेद्य दूध है; औरतों का वेद्य नाय है; और जानवरों का वेद्य पानी है।"

विलियम जेमिज़ ने इस बहस का सार प्रस्तुत किया, "संयम कम होता है, विभेद करता है, और कहता है नहीं; नशा खोल देता है, और आमंत्रित करता है और कहता है 'हाँ'। वस्तुतः ये मनुष्य के भीतर हाँ करने वाली क्रिया को सर्वाधिक उद्ध्वेलित करनेवाली शराब ही है।

मदिरापान करने वाले व्यक्तियों से मद्यनिषेध बरदाशत नहीं होते। सेमियुल बटलर ने अत्यन्त घृणा के साथ कहा, "स्वभाव से मद्यनिषेधवादियों को पागलखाने में डालना चाहिए! लेकिन ज्योंही वे बाहर आयेंगे तो वे पुनः मद्यत्याग की बात करेंगे।"

संतुलित - मदिरापान करने से व्यक्ति में उन जोखिमों को उठाने का आत्म-विश्वास आता है जिससे वह भागता फिरता रहता है। डॉ० जॉनसन लिखते हैं, "यह व्यक्ति को अपने आपसे अधिक प्रसन्न रखता है। मैं यह नहीं कहता कि इसे वह दूसरों के लिए प्रसन्नता का कारण बनाता है।" यहाँ तक कि व्यक्ति के अहंम को तोड़ने के लिए कभी-कभी बहुत ज्यादा पीना भी आवश्यक है। जिस किसी ने भी अपने आप को इस तरह से मूर्ख बनाया वह दूसरों की कमजोरियों को अधिक उदारता से देखता है। न ही शराबी और न ही मद्यत्यागी

की बात अन्तिम सत्य है। चसद्वटन ने बढ़िया ढंग से कहा है: "मद्योन्मादी तथा मद्यत्यागी दोनों एक ही गलती करते हैं; दोनों शराब को एक नशा मानते हैं एक पेय नहीं।"

जीवन में सफलता अथवा असफलता मदिरापीने अपना नहीं पीने पर निर्भर नहीं करती। यह उक्ति कि, "कुछ लोग शिखर पर पहुँचने के लिए संघर्ष करते हैं, दूसरे बोतल से निम्न स्तर पर आते हैं" को उलटा भी किया जा सकता है। बहुत से लोग बोतल की सहायता से शिखर पर पहुँच गए हैं; लेकिन मद्यत्यागियों की एक बहुत बड़ी संख्या निम्न स्तर पर ही जी रही है।

यह बहस तो तब से चल रही है जब पहली बार मनुष्य ने शराब पी। और दोनों तरफ से गर्मागर्म बहस चल रही है। यदि ब्रंटल रसूल जैसे मद्यत्यागी शराब पीने को 'अल्पकालिक आत्महत्या' और इससे उत्पन्न प्रसन्नता को 'क्षणिक एवं अर्थहीन,' बताते हैं तो उन्हीं के समान प्रसिद्ध विनस्टन चर्चिल कहते हैं: "शराब ने जितना कुछ पाया है उससे कहीं अधिक मैंने शराब से निनोड़ा है।" यदि आत्मसंयम वाला व्यक्ति पूछे, "किसी चाबी (कीय) से मस्का का द्वार खुल सकता है?" तो वह अपने आप जवाब देगा "विस्की" (विस् - चाबी से) किन्तु उमर खयाग से लेकर बायरन, कीटस, शैली, जोश, फैज और बच्चन तक हजारों कवि हमें आश्वासन देते हैं कि इससे स्वर्ग के द्वार खुल जाएंगे। अब न्याय किसे हो?

Femina ~~R~~ 79376

Rest - 32350 -

Beacon - 30327



